श्री राम रसायन

श्री राम-रसायन

-राजेन्द्र चान्द्रायण

प्रकाशक

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

संचालक

रश्मिरथी साहित्य प्रकाशन

मुसाफिरखाना

सुल्तानपुर [अवध, उत्तर प्रदेश]

प्रथम संस्करण

धनतेरस १९८२ ई०

मुद्रक

काका प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

मूल्य पन्द्रह रुपये मात्र
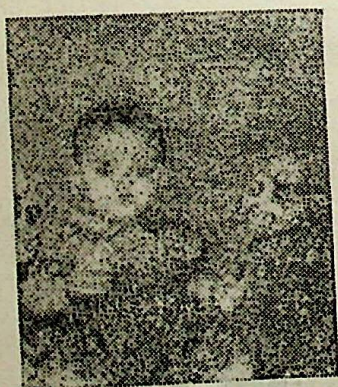
प्रकाशकीय

- प्रस्तुत कीर्ति काव्य [गीति काव्य] को हिन्दी साहित्य-जगत के समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रकाशन को हर्ष हो रहा है।
- 'राम-रसायन' एक सारगर्भित आध्यात्मिक शब्द है। प्रस्तुत प्रबन्ध काव्य में कोई कथा नहीं, अपितु केवल 'राम-नाम-रस-सार रूपी सात्विक शुभ्र गुणगान मात्र है।
- प्रस्तुत कृति में 'ॐ' को रामार्थक प्रतिपादित किया गया है जो जनमानस की वास्तविक 'स्वस्ति-ध्वनि' है। कृति वास्तव में 'रामझरोखा' बन गयी है।
- कवि की भक्तिभरित छंदना-वंदना रामकथा साहित्यश्रृंखला की एक अभिन्न अविस्मरणीय कड़ी वन गयी हैं।
- रचयिता को हम वे-हिचक 'सात्विक-साहित्य का सच्चा-सूरमा' कहेंगे।
- देश के कोने-कोने से विभिन्न मूर्धन्य साहित्यकारों, कविवरों, वेदज्ञ मनीषियों, एवं प्रवुद्ध प्रेस की ओर से निष्पक्ष अनेकानेक सुसम्मतियाँ इस कृति के प्रति प्राप्त हुयी हैं, जो प्रस्तुत कृति के साहित्यिक मूल्य को अतिशय प्रथित-वर्धित करतीहैं। हम उन सभी विद्वद्वर साहित्य-मनीषियों के प्रति अति-अति आभारी हैं।

रामकीर्ति विषयक कतिपय काव्योद्धरण

'राम-रसायन' तुम्हरे पासा ।
सदा रहौ रघुवर के दासा ।।"

सन्त शिरोमणि तुलसीदास

"साकत मरैं संतजन जीवैं ।
भरि-भरि रामरसायन पीवैं ।।"

निर्गुण सन्त कबीर

"अखिल विश्व में रमा हुआ है राम हमारा ।
सकल चराचर जिसका क्रीड़ा-भूमि पसारा ।।"

जयशंकर प्रसाद

"हे वाणी ! यह वरदान सदा अक्षत हो ।
श्री रामचंद्र का गान दास का व्रत हो ।।"

डा. राम कुमार वर्मा

"यह अनन्य आदर्श तुम्हारा मन-संताप सब हर जाता है ।
उसमें रामचरित रस-धारा, पाप आप ही कट जाता है ।।"

मैथिलीशरण गुप्त

"मैं शरणागत हूँ जो कह देता एक बार ।
मैं हर लेता हूँ उसके भय का निखिल भार ।।
देता हूँ मैं निज शरणागत को चरम अभय ।
करता हूँ उसका योग-क्षेम वहन अक्षय ।।"

डा. कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह

"ऐसे मानवेन्द्र राम को, अभिराम को नमन् है ।
ऐसे शक्तिपुंज छविधाम को नमन् है ।।
राम को नमन, राम-नाम को नमन् है ।
छवि-श्याम को नमन, 'राम-बाम' को नमन् है ।।"

डा. लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक'

"है राम सबका, राम के सब, राम भेदातीत है ।
सब एक उसकी दृष्टि में वह सभी का मीत है"

डा. रामेश्वर 'अंचल'

सूचनिका

पुस्तक-परिचय

डा. रामचरण महेन्द्र
पी-एच० डी०
नयापुरा, कोटा (राजस्थान)

श्री राजेन्द्र चान्द्रायण हिन्दी काव्य जगत की उदीयमान जानी-मानी हस्ती हैं। प्रियम्वदा, रूपबाला, शांति, मंगलदीप, उर-ऊर्मि, चान्द्रायणी आदि काव्य ग्रन्थों के उपरान्त आपकी नवीनतम कृति "श्री राम-रसायन" प्रकाशित हुई है।

यों तो कवि ने अपने विशाल अनुभव से जीवन और समाज के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया है परन्तु मूल रूप से उसकी बुनियादी प्रवृत्ति 'भक्ति' और विचारधारा सात्विक आदर्शवाद की ओर हैं।

'श्री राम रसायन' नौ भागों में विभाजित, विभिन्न छन्दों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के गुणों का वर्णन है।

प्रथम खण्ड

में विनय शीर्षक से श्री राम का उद्बोधन है। कवि की आत्मानुभूति है कि अब उसके उर-अन्तस की तम-बेला का अवसान-सा हो रहा हैं, और वह अमल अलबेली प्रकृति–सुछवि में रमकर अभिरम रामलीला का दिनरात गुन-गान करने से आत्मसुख पाता हैं। कवि चाहता है कि श्री राम की अनुकम्पा से वह राम रसायन रूपी मधुरगीत गुनगुनाये। उसे विश्वास है कि श्री राम के प्रताप-प्रभाव से वह निश्चय ही उत्कृष्ट काव्य की सृष्टि कर सकेगा :—

"वैकाल विम्ब था उमगा,
दुविधामय था मन मेला।
रामल उजियारी दीखी,
अब अन्त हुई तम बेला॥"

(राम रसायन : पृष्ठ १)

द्वितीय खण्ड

में श्री राम के यशोगान का विवेचन है। श्री राम के दिव्यगुणों की एक झांकी-सी प्रस्तुत की गयी है। कहा गया है :—

राम हैं शुचि सारस्वत शक्ति,
धर्म के कल्पद्रुम हैं राम।
अनागत-आगत गत हैं राम,
काल धनु धारण करते राम ॥

(राम रसायन : पृष्ठ १९)

तृतीय खण्ड

में निर्णिति सरणि दी गयी है। कवि का सुदृढ़ विश्वास हैं कि :—

"राम हैं पटवैभव श्रीगान,
राम हैं शुभदायक यशवान।
विग्रह — विभूति, मानवी—
भगवत्ता के सर्जक हैं राम ॥"

(राम रसायन : पृष्ठ २६)

चतुर्थ प्रवाह

में स्तवन-सरणि है। इसमें कवि ने माना है कि श्रीराम ही काव्य के अनन्य प्रेरक रहे हैं। यथा :—

"काव्य के प्रेरक परम अनन्य,
आर्ष कवियों से बन्दित धन्य।
तुम्ही हो राशि-राशि रस—रूप,
तुम्ही चरणामृत काव्य अनूप ॥"

(राम रसायन : पृष्ठ २९)

पंचम प्रवाह

में ॐ-सरणि प्रस्तुत की गयी है। कवि की आस्था है कि राम-ॐकार एक ही तत्त्व हैं। राम और ॐ एक होकर 'अहं ब्रह्मास्मि' परमवृत्ति बनाते हैं।

में समन्वय भाव दर्शाया गया है :—

"राम का ॐ, ॐ के राम,
अतुल दोनों का है माहात्म्य ।
ॐ रहता प्रतिपल गत्यात्म,
"ॐ है ब्रह्म" यही सत्यात्म ।।"

[राम रसायन : पृष्ठ ४२]

सप्तम प्रवाह

में दार्शनिक दृष्टि से श्री राम का विवेचन है।

अष्टम प्रवाह

में मंगलमूर्ति सीता जी का स्तवन है :—

"आतमु टोहि कै 'ओपु' लखौ,
अब औरुह काहु न ध्याव अनारी ।
राम कै 'रामा' दसौं दिसि दीपति,
राममयी दुनिया भइ सारी ।।"

[राम रसायन : पृष्ठ ६३]

अन्तिम प्रवाह

मे कालगत निवेदन है। कवि का उद्देश्य 'शुचि मानवता का हित-चिन्तन' है।

पूरे काव्य में दार्शनिक विचारधारा एवं गीति तत्व का प्राधान्य परिलक्षित हैं। लेकिन कहीं भी क्लिष्ट या विचार बोझिल नहीं हैं। गूढ़ तात्विक विवेचन में काव्य की मधुरता मन मुग्ध कर देती है। विभिन्न प्राचीन शैली के विविध छन्दों को भी कहीं कहीं प्रयोग किया गया है। विषय-बोध को स्पष्टता प्रदान करने के लिए पुस्तिका में मार्मिक शीर्षक भी दिये गये हैं। पुस्तक में प्राचीन शैली के दोहा छन्दोंका अलंकृत दर्शन भी होता है, जिसके गाने में अपूर्व आनन्द का अनुभव होता है। कविवर रसखान जैसा माधुर्य, लय और सुर है।

श्रुतिमधुर शब्दों का सराहनीय प्रयोग किया गया है। कृति में आध्यात्मिक विचारधारा को काव्य के मधुर और सुकोमल सूत्रों में बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से पिरोया गया है। भाषा शैली पर कवि का असाधारण अधिकार है।

इस संरचना के गीतों का दार्शनिक पक्ष और मानवीकरण प्रभावशाली रहा है। उनमें राम के प्रति अडिग आस्था है तथा कवि का हृदय भक्तिभाव से भरपूर हैं। इन गीतों में सहज शब्दावली है और इनकी अभिव्यक्ति अकृत्रिम है। गीतों का संगीत-पक्ष भी सुपुष्ट है। जैसे :—

"यह जीवन—भार सधे—न—सधे,
रघुराय की कीर्ति सुना रहा हूँ।
शुचि काव्य तपोवन में रुचि से,
प्रभु-भाव—प्रसून खिला रहा हूँ॥"

[राम रसायन : पृष्ठ ६९]

ये गीत जहाँ कवि के भक्तिभाव की देन हैं, वहीं उसकी ईश्वर में अनन्य आस्था प्रकट करते हैं। अधिकांश गीत भक्तिरस से परिपूर्ण हैं। आत्म समर्पण की अभिव्यंजना का सरस मिश्रण विशेष दर्शनीय है। इसमें आत्मनिवेदन और आत्म समर्पण की भावना की प्रबलता है। कवि की रचना-सामर्थ्य देखकर उनके उज्जवल भविष्य का आभास होता है।

चान्द्रायण जी के प्रस्तुत काव्य वैभव एवं बुद्धि की प्रखरता देखकर हर्ष हो रहा है। इस शानदार पुस्तक के निर्माण-प्रणयन के लिये हार्दिक धन्यवाद।

प्रणामांजलि

साहित्यप्रभ डा० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह
[डी० लिट०]

काव्यमनीषी डा० लक्ष्मीशंकर मिश्र
'निशंक'
[पी० एच० डी०]

[कृपया देखिये पृष्ठ ४]

卐 श्रीमत रामानुजाय नमः 卐

।। श्री शेषशैल शिखरोज्वल पारिजाताय नमः ।।

उभय वेदान्त-प्रवर्त्तक; परमार्थ-रत्न; जगदाचार्य;

श्री–श्री १००८

स्वस्तिपाद महनीय स्वामी मधुसूदनाचार्य जी महाराज

रामानुजमठ, सप्त सरोवर, हरिद्वार

स्वस्ति-सम्बोधन

भक्तिभावित प्रस्तुत 'श्री राम-रसायन' काव्य-कृति का मनोयोगपूर्वक विलोकन करने पर मेरी धर्म-प्रपूरित अन्तरात्मा अति गद्गद् हो उठी।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी के विशुद्ध गुणानुवादमूलक इस रसमय रचना में सहजतः अनोखी 'राम-छवि' संदर्शित हुई है। इस सारगर्भित रामकीर्ति-विवेचनी में 'राम-नाम-रस-सार' तन्मय स्तुतिव्याजस्वरूप साकार हो उठा है।

इस कृति को मैं अपने अन्यतम आयुष्मान शिष्य चिरंजीव 'चान्द्रायण' की 'अनमोल गुरुदक्षिणा' के रूप में सानुग्रह स्वीकार करते हुए, उन्हें प्रशस्त साहित्य-सृजक एवं शतायु होने का अजस्त्र मंगलाशीष प्रदान करता हूँ।

स्वामी मधुसूदनाचार्य जी महाराज
हरिद्वार
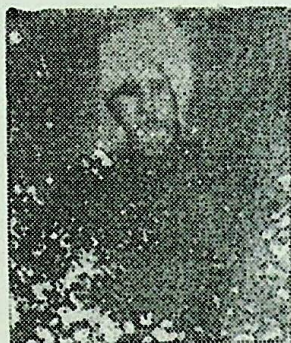
परम पूजनीय पितामह— कुं० रामदीन सिंह जू चान्द्रायण
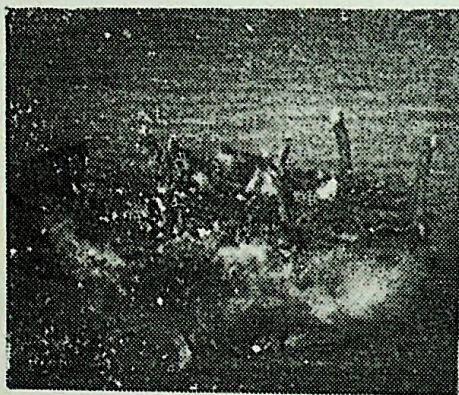
काव्यभिक्षु (रचयिता) अपने स्व० पिता जी के चिता-चिंतन में भावलीन
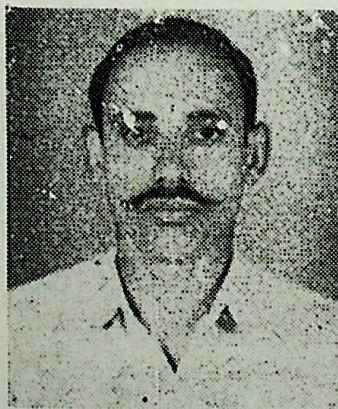
काव्यकिंकर
राजनारायण

चान्द्रायण बन्धु :
राजेन्द्र :

पुरोवाक् :—

साहित्यर्षभ डा० कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह
डी० लिट०
(भूतपूर्व कुलपति मगध विश्वविद्यालय)
लखनऊ

श्री राजेन्द्र चान्द्रायण साधना के धनी कवि हैं। सम्प्रति साहित्य के क्षेत्र में साधना का अर्थ है—प्रचार, नारेबाजी, विज्ञापनप्रियता और दलबन्दी के बल पर रेडियो, टेलीवीजन, सरकार द्वारा अधिकृत साहित्यतंत्र में प्रवेश प्राप्त कर सस्ती कवि-कीर्ति प्राप्त करने की कामना का त्याग कर उच्चतम मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये काव्य-रचना करना। उच्चतम जीवन-मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता हमारे देश में काव्य-रचना का एक अनिवार्य अधिष्ठान है। बाल्मीकि व्यास, कालिदास, तुलसीदास जैसे हमारी परम्परा के महान कवि अपना पूरा असली नाम भी अपनी रचनाओं में नहीं छोड़ गए हैं। उनके नाम, धाम, प्रान्त, परिवार की अस्मिता उनकी रचनाओं के विराट ज्योतिर्मय महाप्रसार में खो गई है। अब तो उसको खोजकर पा लेना भी एक सुखद किन्तु निरर्थक बौद्धिक व्यायाम मात्र है।

इस युग में भी जब विज्ञापन-पराङ्मुख और प्रचार निरपेक्ष कवियों और उनकी कृतियों से साक्षातकार हो जाता है तो बड़ी प्रसन्नता होती है। 'श्री-राम रसायन' के रचयिता श्री राजेन्द्र चान्द्रायण ऐसे ही मूक साधना के कवि हैं। वे वावदूक हैं तो केवल अपनी बहुविध काव्याभिव्यक्तियों में। अपने विषय में वे कुछ बोलते या कहते नहीं। 'श्री राम रसायन' के पूर्व उनकी कई अन्य रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनके नाम हैं, 'प्रियंवदा' (स्फुट गीत संग्रह) 'रूप बाला' (नारी के नौ रूप), 'शान्ति' (आस्तिक पद संग्रह), 'चान्द्रायणी' (कथाकाव्य संकलन), 'मंगलदीप' 'उर-ऊर्मि' आदि। ये सभी रचनाएं सुन्दर हैं। इनकी प्रमुख विशेषता यह है कि ये स्थूल दैहिक संवेदनाओं के काव्य नहीं हैं। इनसे कवि शुद्ध सत्व अथवा चेतन आत्मतत्व के स्वरूपानुसंधान का प्रयत्न करता है और उसे वाणी देने का प्रयत्न करता है। इसी प्रयत्न में कबीर की भी वाणी, अटपटी हो गयी थी। इसलिए यदि चान्द्रायण जी की वाणी में कुछ अटपटापन आ जाए, तो आश्चर्य क्या है? प्रस्तुत कृति की वाणी उस चितवन उस समीक्षादृष्टि की माँग करती है, सुजान जिसके बश में हो जाते हैं।

कवि चान्द्रायण जी की भाषा उनकी रोमांटिक प्रवृत्ति की संसूचक है। दूसरी ओर विषय-चयन उनकी यथार्थवादी दृष्टि का संकेतक है। इन दोनों को सम्यक सन्तुलित करने की आवश्यकता है।

'श्री राम रसायन' नामक अपनी नवीन रचना में श्री चान्द्रायण जी ने इस दिशा में कुछ प्रयत्न किया है। 'श्री राम रसायन' शुद्ध आध्यात्मिक काव्य है। इसमें कई प्रकार की रसात्मक शैलियों में आत्मतत्व को प्रतिपादन किया गया है। कुछ ऐसी रचनाएं भी इस संग्रह में हैं, जिनको असंदिग्ध रूप में कबीर की शैली का कहा जा सकता है। ये कविताएं यह सूचित करती हैं कि कवि की आत्मानुभूति शब्दों में सम्यक् अभिव्यक्ति प्राप्त करने के लिए आकुल-व्याकुल है। अनुभूति की उच्चता और गहराई अटपटी शैली में ही व्यक्त हो पाती है। संसार के सब रहस्यदर्शी कवियों को इस अभिव्यक्ति सम्बन्धी विवशता का अनुभव करना पड़ा है। इस संग्रह की अध्यात्मदर्शन' शीर्षक रचना इस कथन का प्रमाण है। उदाहरणस्वरूप निम्न पंक्तियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं :—

......जगु 'पुतरी' को खेल है, नचै तृषा के सूत।
वाही के वशभूत ह्वै, छलना के नचकूद ॥

× ×

......एक 'रकारी' राति भर
हँसि - हँसि कै बर्रायऽऽ :—
दीपक - तेज - प्रकाश लौं
रामहि राम लखाय।

× ×

......हेमकमल कै नाल है, परिमल को प्रतिपाल।
अलबेली अनुभूति सों, बिनसहि भ्रम-भूचाल ॥

[दोहा दुग्ध सरणि : पृष्ठ ५७]

× ×

कुछ कविताओं में चान्द्रायण जी ने कवि के आदर्श का भी चित्रण किया है। उनकी मान्यता हैं—'रुचै, कविता सदा राम रचाये।'

उनके अनुसार कविता वह है, जो "लोक हितैषण में रहे राती।"

[विनय सरुचि : बड़वानी : प्रष्ठ ११]

इस संग्रह का द्वितीय प्रवाह उसका सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है। यह प्रवाह कवि की अप्रकाशित रचना "रामस्य रामू" की अन्तिम सरणि का अविकल उद्धृतांश है। इसमें एक मृत पक्षी-शावक की आत्मा का उर्ध्वगमन बड़ी प्रभविष्णुता के साथ चित्रित किया गया है। कवि ने इस खग-शावक को 'अनुहंस' नाम दिया है। यह अनुहंस राम के तात्विक स्वरूप का अपनी वाणी द्वारा औपनिषदिक शैली में कीर्तन करता है :—

राम गति-अगति और सृति-मृति
राम की गहन एषणा गूढ़।
राम ही हैं जग जगदाधार
राम की क्रीड़ा रूढ़-अरूढ़॥

× × ×

राम हैं मरु के श्यामल मेघ
राम हैं दिग्दिगन्त वपुमान।
नित्य शाश्वत परिणामी प्रवर
राम करुणा के ऊर्जित ओघ॥

[यशोगान सरणि : पृष्ठ १९]

× × ×

तृतीय प्रवाह में राम के महिमामय व्यक्तित्व का कुछ आभास प्रस्तुत करने का प्रयत्न कवि ने उदात्त शैली में किया है। चतुर्थ प्रवाह में राम सम्बन्धी तत्वदर्शन का चित्रण किया गया है, किन्तु पंचम प्रवाह में ब्रह्म के निर्गुण और सगुण स्वरूप का प्रतिपादन एक विशिष्ट शैली में किया गया है। इस प्रवाह में ओंकार के निर्गुण निर्विशेष स्वरूप का प्रतीक है :—

ऊं शाश्वत मंगलमय मूर्ति
ऊं ही है चेतन की स्फूर्ति।
ऊं सर्वोच्च कला का कूट
ऊं है अनुपम अमृतमय घूंट॥

× × ×

ऊं ऊषा–सा पुण्य प्रभात
ऊं अम्बर का पीत प्रभात।
सजग जड़–चेतन में है ऊं
यही करता जग को चितिस्नात॥[ऊं-सरणि:पृष्ठ ३७]

ऊं में विश्वक्रिया का वास

ऊं मय है 'विमृत्यु--अवकाश' ।

ऊं चिन्मयता की रस--राशि

ऊं नभ निवसित ' राम उजास' ।।

ऊं नैसर्गिक कुमुद कला, ऊं है ऊर्ध्वगमित सुर-घोष ।

सुरतिमय-सारे तपबल का, ऊं है अविचल अगम अदोष ।।

[ऊं सरणि; पृष्ठ ३७]

इस प्रवाह में राम को एक ओर सगुण और सविशेष ब्रह्म का प्रतीक कहा गया है तो दूसरी ओर उन्हें सगुण ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म दोनों का अतिवर्ती बताया गया। ओम की सार्थकता इसी बात में है कि राम-रस में लीन कर देता है :—

राम विधि हरिहर के सर्जक

ऊं है उनकी शक्ति पराक ।

राम-रस मंथन है ऊं-कार

उसी से रसमय है संसार ।।

ऊं को मत खोजो साथी ऊं है अनावतरित सुशक्ति ।

राम रस में करती जो लीन, ऊं है परा प्रदत्त प्रवृत्ति ।

[समन्वय सरणि : पृष्ठ ४२]

इस ग्रन्थ का सप्तम प्रवाह अधिकांश साखी शैली में रचित आध्यात्मिक काव्य है। अष्टम प्रवाह में बड़े सरस ६सवैये संकलित है । श्री सीता का यश-स्तवन इस कृति की ज्ञानधारा को भक्ति में परिणत कर देता है । अन्तिम प्रवाह का गीत "मुझे पीर-परा अब टेरती है" इस धारणा की पुष्टि करता है । यह गीत यद्यपि सवैया शैली में लिखा गया है फिर भी इसमें गीत काव्य के आकर्षक और रमणीय तत्व प्राप्त होवे हैं । "श्री राम रसायन" में ज्ञान भक्ति निर्व्याजपूर्ण आध्यात्मिकता का निर्वाह आदि से अन्त तक किया गया है । आज मनुष्य भौतिकता के घोर बन्धन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए तड़प रहा है । उसका यह प्रयन्त यदा-कदा यत्र-यत्र कतिपय काव्य प्रयत्नों में भी लक्षित हो जाता है । इस दृष्टि से चान्द्रायण जी की कृति "श्री राम रसायन" एक अभिनन्दनीय उपक्रम है । उसमें अचित का आवरण भंगकर 'चिततत्व' को प्रकाश में लाने की क्षमता है। ऐसी कृतियों का वर्तमान भले ही बहुत रंगीन न दिखायी पड़े किन्तु उनका भविष्य निश्चय ही मंगलकारक होता है । ऐसी हिरण्यगर्भा रचनाओं को लोक मंगल की दृष्टि से प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है । कवि की भाषा में अनेक लोक-तत्व अपने सहज रूप में सुलभ हैं ।

अनुशंसा

काव्यमनीषी डा० लक्ष्मीशंकर मिश्र
'निशंक'
पी-एच०डी.
सम्पादक 'सुकवि विनोद'
वार्डेन निवास
जयनारायण डिग्री कालेज, लखनऊ ।

साधक—कवि ज्ञानी और प्रबुद्ध होता है एवं क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठकर नये आदर्शों की स्थापना के लिये सतत प्रयत्नशील रहता है । वह अपने 'स्व' से ऊपर उठकर नये आदर्शों की स्थापना के लिये सतत प्रयत्न-शील रहता है तथा हर प्रकार के उत्सर्ग करने को तैयार रहता है ।

कविवर राजेन्द्र चान्द्रायण जी ऐसे ही 'साधक—कवि' हैं, जो मानवीय जीवन-मूल्यों की रक्षा करते हुये निरन्तर कवि-कर्म के ऊंचे सोपान चढ़ते ही चले जा रहे हैं । उनका अन्तर्कवि सात्विक सुधर्म से जुड़ा है, धन से नहीं । आज के इस धावमान युग में यही सबसे बड़ी साधना है ।

मुक्त छंद में लिखने वाले चान्द्रायण जी को दोहों और सवैयों में सफलत: अपनी भावव्यंजना करते हुये देखकर आनंदमिश्रित आश्चर्य होता है । संभवत: 'श्री राम-रसायन' उनका सातवां प्रकाशित काव्य-ग्रंथ है । इस कृति से स्पष्ट है कि हिन्दी-काव्य के साथ-साथ कवि ने संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का भी अच्छा अध्ययन किया है, तथा भक्ति एवं योग की विभिन्न प्रणालियों एवं प्रक्रियाओं से वे पूर्ण परिचित मालूम पड़ते हैं । 'भाव-बोध' के साथ चान्द्रायण जी का 'शिल्प बोध' भी विकास-शील है । मुक्त—छंद के बाद, एकदम सवैया जैसे प्राविधिक छन्द में रचना करके कवि ने अपनी सहज प्रतिभा का परिचय दिया है ।

कभी वे तुलसी की भांति समर्पण की पद्धति अपनाते हैं कभी, कबीर-सा 'अनहद नाद' सुनाते हैं लेकिन सबका सार 'राम-रसायन' ही है । मै इसे पढ़कर कह उठता हूं :—

'राम को नमन्, 'राम-वाम' को नमन् है
छवि-श्याम को नमन्, 'राम नाम,' को नमन् है"

यह एक भावपूरित सद्ग्रंथ है । इस रचना के लिये कवि बधाई का सुपात्र है ।

सम्मति

प्रकवि—श्री आरसीप्रसाद सिंह जू
पटना (बिहार)

कविवर राजेन्द्र चान्द्रायण की काव्य-पुस्तिका 'श्री रामरसायन' पढ़कर ऐसा लगा कि इस भयानक अनास्था एवं भौतिकवादी युग में कम-से-कम एक ऐसा कवि तो है, जो अपनी श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वास को शब्दों के माध्यम से रूपायित करने का सफल साहस दिखा रहा है; वर्ना हिन्दी कविता तो अपने उस प्रगतिपथ पर छलांग ले चुकी है, जहां सद्भावना नामक वस्तु सारा मूल्य खो चुकी है, और जीवन के ऊंचे आदर्शों ने यदि 'स्वेच्छा-सन्यास' नहीं लिया तो उन्हें बल-पूर्वक निर्वासित किया जा सकता है। पूरा का पूरा काव्यमंच एक ऐसा उपद्रव बन कर रह गया है, जहां रंग-व्यंग्य, गाली-गलोज, कूट-काट, तथा भांड़-भड़ैती' के कहकहे, मजाक एवं नक्शेबाजियों की भीड़ ही उछलती–कूदती और नाचती-गाती नजर आती है। ऐसे अजनबी और अनोखे माहौल में राजेन्द्र चान्द्रायण की यह "राम-रसायन" मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ मानो जलते हुए रेगिस्तान में कोई सरस उद्यान हो। यह मैं किसी भक्ति भावना के परिपेक्ष्य में नहीं कह रहा, बल्कि प्रस्तुत काव्य की पंक्तियों में चिन्तन का वह बिन्दु भी पाता हूं, जहां हृदय की वेदना, साहित्य के मन्दिर में साधना का दीप जलाती है, या यों भी कहिये कि शब्दों की गंगा शिव के मस्तक पर चढ़कर सौन्दर्य का अक्षय श्रृंगार भी बनती है। पुस्तक की विभिन्न ९ सरणियाँ इसका सार्थक प्रमाण हैं।

श्री चान्द्रायण जी की कविता में खड़ी बोली का काव्य-वैभव एवं शब्द-सामर्थ्य तो है ही, साथ ही ब्रजभाषा की परम्परागत छन्द-योजना एवं सौष्ठव–संस्कार भी उत्तराधिकार में प्राप्त किया है। इन दोनों के अतिरिक्त उनके काव्य में अपनी 'माटी' की सरस सुगन्ध भी मिली है। अत: इनकी कविता मिलजुल-कर एक ऐसी परिधि को छूने लगती है जो संतों के–'प्रेम लपेटे अटपटी बाणी' जैसी प्रतीत होती है। पर सच तो यह है कि जहां हृदय अपने पूरे खुलेपन और सहज स्वरों में बोलने लगता है, वहां शब्द के तार पीछे छूट जाते हैं। रस की बाढ़ में बाणी लड़खड़ा जाती है। असीम की वीणा जब बोलने लगती है, तब अन्य सीमाओं की बात ही क्या? रोम–रोम से यह पुकार उठने लगती है :—

"ले लो सब कुछ प्रजातंत्रिके, आस्तिकता शुचि लहने दो।
छीनो यदि आस्तिकता, नैतिकता तो रहने दो॥

नैतिकता है यदि लेना, तो जनमुखी भाव रहने दो।
मेरी नस-नस में प्रिय है, बस राम-राग बहने दो॥"

[श्रीराम-रसायन : पृष्ठ ८]

इसमें सन्देह नहीं कि यह 'राम-राग' इस 'राम-रसायन' में पूर्णतः ओत-प्रोत है। कोई पाठक यह समझने की भूल न करें कि यह 'साकेत' या तुलसीकृत रामायण की तरह रामकथा का ग्रंथ है। कथाभाग तो इसमें है ही नहीं। हैं तो केवल राम के परमात्मतत्व को आधार बनाकर भक्ति, ज्ञान, और वैराग्य का गायन। यह गायन कभी उनके यश का है, तो कहीं उनके पावन चरित्र का, कहीं उनके लीला-प्रसंग का और कहीं उनके शब्द-रूप 'ऊँकार' का। तात्पर्य यह कि कवि ने श्री राम को मर्यादापुरुषोत्तम से लेकर परम-ब्रह्म तक के विविध रूपों को अपनी निरवद्य वाणी का विषय बनाया है, और इस प्रकार अपनी लेखनी को 'राम-रस' में डुबोकर पवित्र किया है।

कवि का कहना है कि :—

"अरे ओ! जगमीत!! न रोको मुझे,
रघुराय की राह पर जा रहा हूं।"

[रामरसायन: पृष्ठ ७०]

कवि चान्द्रायण को बधाई है कि उन्होंने श्री रामयशगायन से अपनी कविता के साथ ही सम्पूर्ण जीवन को सत्यं, शिवं, सुन्दरम का पुण्य आश्रय बनाकर लोक-मंगल की अमर उद्भावना की है।

मंगलाशीष

आचार्य वृन्दावन दास
'साहित्यवारिधि'
अध्यक्ष—व्रज साहित्य मंडल एवं
उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन [मथुरा]

'श्री राम-रसायन' की प्रति प्राप्त हुई। इसमें अनेक मोहक प्रसंगों की चर्चा है। काव्य की अनेकानेक पंक्तियां पाठक को आत्मविभोर करने की क्षमता रखती हैं। चान्द्रायण जी के काव्य का परायण करते-करते पाठक एक ऐसे वातावरण में प्रवेश कर जाता है जो परम पवित्र और रससिक्त है। भक्ति भावना से पूरित इस काव्य में मन को लुभाने और अनुरंजित करने की अपूर्व शक्ति है।

चान्द्रायण जी ने जो कुछ कहा है, शुभ भावनाओं से प्रेरित होकर, आत्म-विभोर होकर अपने सच्चे मन की अभिव्यक्ति की है। पाण्डित्य प्रदर्शन का कोसों पता नहीं। उनकी सदाशयता सन्देह से परे हैं।

चान्द्रायण जी की प्रस्तुत काव्यगंगा में अवगाहन कर हमने कुछ पुष्परत्न ढूंढ़ निकाले हैं, जिसके सौरभ से हम पाठको को भी अनुरंजित करना चाहते हैं :—

(i) हे राम ! तुम्हारी लीला दिन रात गुना करता हूं।
अलबेली प्रकृति सुछवि में रसलीन रहा करता हूं।।

(ii) बेकाल विम्ब था उमगा, दुविधामय था मन-मेला।
रामल उजियारी दीखी, अब अन्त हुई तम-वेला ।।

[रामरसायन : पृष्ठ २]

(iii) "सुविहाय निजत्व-परत्व सबै, भली 'भायप' में मैं गुजारा करूं।
नहि चाहत हौं अब और कछू, बस रामहि-राम उचारा करूं।।"

(iv) "राम रमा में जो रम पावे, जो समाज-सेवा उर लावे।
सुखद-वरद जन-ज्योति जगावे, सजग-सुभग सुमनस बनि धावे।
हरिजन वही जो हरि गुन गावे, हरिजन वही जो हरि-हर ध्यावे।
हरिजन वही जो जी पुलकावे, हरिजन नित जनमन विकसावे।।"

[राम रसायन : पृष्ठ ९]

हरिजनों के रूप और उनकी कर्त्तव्य की भावना के सम्बन्ध में चान्द्रायण जी कीउपरोक्त छन्दबद्ध पंक्तियां बहुत सुन्दर हैं, और मननीय हैं।

आप शुभ्र काव्य के प्रणेता हैं; विद्वत्वरेण्य हैं। मैं आपके कृतित्व से अति प्रभावित हुआ हूं। इस अमूल्य कृति के लिये हिन्दी जगत के धन्यवादाई हैं।

विज्ञप्ति

शीर्षस्थ कविवर शिवसिंह 'सरोज'
['लक्ष्मण' महाकाव्य के रचयिता]
सम्पादक मंडल :
'स्वतंत्र भारत', लखनऊ

अयोध्या के कनक-भवन के रससिद्ध संत-कवि जानकीदास जी अथवा किशोरी जी द्वारा रचित 'रामचरित' ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में पिछले कई दशकों से चर्चा का विषय बना है। इस ग्रन्थ में सर्वस्व भी राम ही हैं :—

"ब्रह्मज्ञान जप, योग तप, दान नेम व्रत भूर।
राम सहित उत्तमसर्व, राम-रहित सब धूर॥"

इसी प्रकार श्री राजेन्द्र द्वारा रचित प्रस्तुत 'श्री राम-रसायन' पुस्तिका में सर्वत्र राम-रस ही व्याप्त है, जो अवश्य ही रसिकों के लिये आल्हादकारी होगा। राम-नाम के सहारे ही अध्यात्मनिरूपण का भी उत्तम प्रयास किया गया है। कवि ने खूब परख-तोल कर राम-नाम का सार ग्रहण करने का प्रयास किया है :—

डाँडी तो तप कै अहै, धरमु पसेरी जानु।
करमु पालरा साधि कै तोलहि राम 'सुजान'॥

[राम रसायन : पृष्ठ ४९]

यह छोटी सी पुस्तिका आनंदमयी अनुभूति और भक्ति-रस से ओत-प्रोत है। इस दृष्टि से यह पाठकों को प्रिय हो सकेगी, इसमें संदेह नहीं। मेरी मंगलकामना।

स्वस्ति सम्बोधन

त्यागतपोमूर्ति बल्लभदास 'विन्नानी'
शान्ति-अधीश ;
अध्यात्मवेत्ता; दैवज्ञ शिरोमणि ;
युगदृष्टा: डाक्टर-आफ-डिविनिटी,
स्ट्रान्ड रोड, कलकत्ता।

आध्यात्मिक, धार्मिक एवं नैतिक भावनाओं से ओत-प्रोत होने के कारण 'राम-रसायन' नामक पुस्तक सामान्य रूप से सभी के लिये एवं विशेषकर श्रद्धालु लोगों के लिगे परम उपयोगी, प्रेरक, एवं संग्रहणीय बन गई है, जिसमें आपकी दिव्य अन्तरात्मा की ज्योति दीख पड़ती हे। आप मेरे हार्दिक साधुवाद व बधाई के पात्र हैं।

अभिमत

प्रोफेसर डा० रामेश्वर दयाल गुप्त
पी-एच० डी०
[मूर्धन्य विद्वान आर्य समाज]
सम्पादक : 'आर्यों का त्रैतवाद'
ज्वालापुर (हरिद्वार)

श्री चान्द्रायण जी ने यह 'श्री राम-रसायन' नामक स्वतंत्र काव्य लिखा है। इसको आद्योपांत पढ़ जाने पर उसमें रामकथा का लेशांश भी नहीं मिला। उसमें राम को ओमार्थक बताकर ओम के महत्व, योगियों के परमप्रिय चिन्ह 'ॐ' और उपनिषदों के प्रणवगान का समावेशन किया गया है। योग-मुद्रा में ॐ कैसे स्मरण रहता है, यह समझाया गया है। गोपथ ब्राह्मण की भाँति समझाया गया है कि 'अ+उ+मू' से 'ओम्' शब्द बना है। ऋगवेद के आदि प्रचेता 'अग्नि' से 'अ' और यजुर्वेद के वायु ऋषि से 'उ', तथा आदित्य व अंगिरा से 'म' लेकर 'ओउम्' नामक शब्द बना है, जो व्याकरण में संज्ञा न होकर अव्यय है। फिर कहा है कि यह क्रमशः ईश्वर+जीव+प्रकृति के द्योतक हैं। 'अ' ईश्वर के साथ जब 'उ' (जीव) मिलता है तो ऊपर जाकर 'ओं' हो जाता है, पर जब वह प्रकृति 'म' के साथ जा मिलेगा तो 'मु' होकर नीचे जावेगा। 'ओम' ही कठोपनिषद का 'उद्गीथ' है। 'राम' और 'ओम' को मिलाकर सनातनी श्री चान्द्रायण जी ने सगुण को निर्गुण की ओर ले जाने की प्रक्रिया प्रारम्भ की है। इसके लिये उन्हें साधुवाद है। वह वैदिक पंथ है। वह इस देश का मूल धर्म-विन्यास है। उनका राम सर्वोच्च, शाश्वत अनवतरित प्रणव-शक्ति है। ऋगवेद में भी 'राम' शब्द प्रयुक्त हुआ है पर वहाँ पर इसका यौगिक अर्थ 'रात-का-अंधेरा' है। परन्तु व्याकरण में यौगिक शब्द भी रूढ़ि हो जाते हैं। लोकाचार में सुधी-सन्तों ने 'राम' का अर्थ 'सबमें रमने वाला' सर्वव्यापक 'भगवान' कर दिया है। तुलसीदास जी ने, अध्यात्मरामायण के भक्तिभाव से अनुप्राणित होकर, 'ॐ' को 'राम' का समानार्थक कर दिया :—

निरगुन तें एहि भाँति बड़नाम प्रभाव अपार।
कहहुं नाम बड़ राम तें, निज विचार अनुसार॥

निर्गुणोपासना से भी राम का नाम बड़ा है, जैसा कि तुलसीदास जी का कथन है कि :—

"ब्रह्म राम ते नामु बड़ वरदायक वरदानि ।
रामचरित सत कोटि मँह लिय महेश जिय जानि ।।"

अर्थात राम का नाम ब्रह्म से भी शतकोटि गुना अधिक फलदायक है। तुलसी ने शिव जी के मुख से भी राम-नाम का गुणगान करवाया है।

इस लघु काव्यपुष्पी में राम को 'ॐ'; सीता को अमिता (सितता) माना गया है। सीता प्रकृति के रूप में ईश्वर राम की संप्रिया रूपी गुह्य शक्ति है; आद्या शक्ति है।

वाल्मीकि रामायण में लंका-विजय के बाद रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण का यह प्रस्ताव ठुकरा दिया कि सोने की लंका में ही बस जाया जावे। वह कहते हैं कि :—

"यद्यपि स्वर्णमयी लंका तदपि न मे रोचते लक्ष्मण ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।"

आसेत हिमाचल सारे देश को रामचन्द्र ने एक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक इकाई बनाई थी। वाल्मीकि ने हमारे उत्कर्ष की यही कहानी लिखी है। राम के चरित्र में यह राष्ट्रहितैपिता रेखांकित करने योग्य है।

प्रस्तुत कृति में जिस आस्तिक्य भाव से सराबोर होकर कवि की 'कविता' मुखरित हुई है, वह निःसन्देह स्पृहणीय एवं प्रशंसनीय है। मानस की कृपा से 'राम' और 'ओउम्' नाम पर्यायवाची बन गये हैं। कवि ने इस ओर तन्मय भक्तिभाव-पूरित सुन्दर साहित्यिक प्रयास किया है।

\+ \+ \+

कवि ने 'कविता' को 'बड़बानी' के नाम से अभिहित किया है। इस विषय में निम्नलिखित पंक्तियां मुझे बड़ी मार्मिक एवं सत्य लगीं :—

"सबके दुख दाहि अनन्द लहै,
दुखिया की जुरावै व्यथामयी छाती ।
सुखिया को करै सुख दूनो सदा,
'मुखिया'—कवि में उर बीन बजाती ।।"

[रामरसायन : पृष्ठ ११]

कवि धन्यवाद का सुपात्र है। ●

श्री राम-रसायन

शुभाशीष : शुभकामनायें

"भक्ति ज्ञानयुतं रम्यं नाम 'राम-रसायनम्' ।
काव्यं राजेन्द्र लिखितं भूयाद्धर्माभिवृद्धये ।।"

ज्योतिषाचार्य :
श्रीविभूति भास्करानंद लोहनी
सम्पादक : "आग्रहायण"
लखनऊ

डा० अमृतलाल नागर
[पद्म भूषण]
(उपन्यास सम्राट)
लखनऊ

'श्री-रामरसायन' पुस्तक भेजने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं भी राम-सागर में तैरने वाली एक छोटी-सी-मछली के समान हूं, इसलिये मुझे आपकी इन कविताओं में बहुत आनन्द मिला।

आपकी भक्ति को प्रणाम करता हूं, और आपको हार्दिक आशीर्वाद देता हूं। ...आपकी यह पुस्तक एक बार और पढ़ूंगा।

काव्यमूर्त्ति श्रीवयं वियोगी हरि जी
दिल्ली

'श्री-राम रसायन' मैंने देखा और इस परिणाम पर पहुंचा कि आप श्रीराम के परम भक्त हैं और भक्ति-भावना से निकली हुई वाणी के अधिकृत पुजारी भी हैं।

आपकी कई रचनाओं ने मुझे मुग्ध कर दिया। शैली सरस और प्रांजल है।

—आचार्य डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम'
डी० लिट०
[वैदिक साहित्य के शीर्षस्थ विद्वान]
आर्यनगर, कानपुर

कविवर श्री राजेन्द्र जी चान्द्रायण भगवती वाणी के सच्चे उपासक हैं। उनकी कतिवाओं को पढ़कर जो भाव-तरङ्गें उठती हैं, वे प्रत्येक पाठक को प्रभावित करती हैं। सारस्वत साधना इसी का नाम है।

'श्री-राम रसायन' में जिन १ सरणियों का गान हुआ है, वे उद्बोधक ही नहीं, भावप्रवण बनाने में भी सक्षम हैं।

मैं चान्द्रायण जी को अपना मङ्गल-आशीष देता हूं। वे इसी प्रकार सारस्वत साधना में निरत रहें और यशस्वी हों।

डा० नरेन्द्र कोहली
ग्रेटर कैलाश
नई दिल्ली

आपकी पुस्तक 'श्री-राम रसायन' देख गया हूं। आप में भक्ति, लगन और काव्य तीनों हैं। भक्ति परम्परा आप में छाई हुई है। परम्परा आगे बढ़ावें।

शुभाशीष

डा० विनय मोहन शर्मा
अरेरा कालोनी
भोपाल

आपकी रामरस से सिंचित कविता पढ़कर हृदय उल्लसित हो उठा। आपमें प्रतिभा है, नई नई उद्भावनाएँ लहरा रही हैं।

'श्री राम-रसायन' काव्य रसिकों को विभोर बनाए बिना न रहेगा।

कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन'
(हिन्दी संस्थान)
लखनऊ

'राम-रसायन' का पारायण कर गया ; बड़ा आनन्द आया।

द्वितीय और चतुर्थ प्रवाह में कहीं-कहीं 'विष्णु सहस्रनाम' का स्पर्श मिला। ॐ-सरणि पंचम प्रवाह में विशेष मन रमा। कुछ दोहे अच्छे लगे।

यथा :—

"राममिलन मँह नेह दृढ़,
अहम् - बहम् मनु ! छोड़।
जैसे माखन आँच दइ,
'मइहर' लेत निचोड़॥"

योग के प्रकरण में कबीर की याद आई। अध्यात्म-दर्शन अपने स्थान पर उत्तम है। 'अन्तिम आत्मानुभूति' के कुछ छन्द एवं श्री सीयस्तवन में समर्पण का सुख और अन्तिम प्रवाह में बहाव का ऊत-भाव अच्छे लगे।

डा० क्षेमचन्द्र 'सुमन'
शाहदरा
दिल्ली

'श्री-राम रसायन' कृति की अग्रिम प्रति मिली। आपने अपनी इस रचना में भगवान श्री राम की कीर्ति का वर्णन जिस विनयमूलक सरणि के साथ किया है, वह वास्तव में अभिनन्दनीय है। इसमें यथाप्रसंग जिन ९ सरणियों को अपनी इस रचना की निर्मिति का माध्यम बनाया गया है, वह भी आपकी विशिष्ट रचनापद्धति का परिचायक है।···यह आपकी निष्ठा और साधना का परिचायक है।

आपकी सर्वात्मना सफलता चाहता हूं।

डा० निजामुद्दीन
एम.ए., पी-एच.डी.
श्रीनगर (काश्मीर)

'राम रसायन' में आपकी विनयानुभूति शतशः धाराओं में प्रवहमान है।···रचना को पढ़ते हुए श्री राम के प्रति अगाध भक्तिभाव उत्पन्न होता है।

'साकार-निराकार', 'अध्यात्म-दर्शन', 'योग', कविताएँ प्रभावशाली हैं ; भावोद्वेलक हैं।

डा० प्रभुदयाल अग्निहोत्री
भूतपूर्व कुलपति जबलपुर विश्वविद्यालय एव संचालक मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
भोपाल

'श्री राम-रसायन' की प्रति मिली। यह रसायन सच्चे अर्थ में (रस + अयन) है। आपका कहना सर्वथा सत्य है कि "रुचं कविता सदा राम रचाये।" इसकी कुछ सरणियों (साकार-निराकार: अध्यात्म-दर्शन आदि) के कुछ छन्द तो बड़े ही मनोरम हैं।.. भगवान राम आपको उत्तम स्वास्थ्य और उत्फुल्ल मन दें।

कवि—श्री डा० किशोर काबरा
एम. ए., पी-एच. डी.
अहमदाबाद

'श्री राम-रसायन' की प्रति मिली। 'अतिमनस' के तल पर आपकी हर अनुभूति विराट से जुड़ती है। कृति में गरिमा है, काव्य तत्व है। आप में प्रतिभा भी है, यह निश्चित है। आपकी सर्जनात्मकता पाठकों का प्यार प्राप्त कर सके, यही कामना है।

डा० कुबेरनाथ राय,
पी-एच० डी०
नलवाड़ी (आसाम)

आपकी पुस्तक "श्री राम-रसायन" देखकर पहले लगा कि कोई भजन-संग्रह जैसी चीज होगी, परन्तु भीतर खोलकर पढ़ने में कुछ और ही अनुभव हुआ। यह तो गंभीर रचना है, विशेषतः 'द्वितीय प्रवाह' से 'षष्ठ' प्रवाह तक। पृष्ठ १७ से पृष्ठ ३८ तक मैटर ऐसा है कि प्रथम श्रेणी की अभिव्यक्ति और वस्तु-तत्व की कोटि में बैठता है। कुछ पंक्तियों में 'आगम' के तथ्य बड़ी सावधानी से बुने गये हैं; और इस अंश की बुनावट बड़ी 'ठस्स' अर्थात सघन है।

डा० भागीरथ मिश्र
'वारीश-शास्त्री'
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विद्यालय
वाराणसी

आपकी कृति "राम रसायन" अनुभूति प्रधान सुयशशालिनी रचना है। बधाई स्वीकारें।

डा० एन० रामन नायर
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
कोचीन विश्वविद्यालय कोचीन (केरल)

आपका 'श्री राम-रसायन' काव्य प्राप्त हो गया। इस स्तुत्य काव्य के लिये मेरी बधाई स्वीकारें।

आशीर्वाद!

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
एम. ए; साहित्याचार्य
[हिन्दी संस्थान से पुरस्कृत विद्वान]

आपकी नवीन कृति 'राम-रसायन' का रसास्वादन करके बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने अत्यन्त नवीन सरणि पद्धति से वर्गीकरण करके भगवान श्रीराम का जो यशोगान किया है, उससे निश्चय ही आपका कवि-यश संवर्द्धित और प्रथित होगा। आपकी स्तवन सरणि और दोहा-दुग्ध-सरणि मुझे बहुत ही प्रिय लगी। इस मनोहर रससिक्त काव्यसृष्टि के लिए आपको बहुत-बहुत बधाइयां।

डा० हरद्वारी लाल शर्मा
[हिन्दी संस्थान से पुरस्कृत विद्वान]
मेरठ

समकालीन कविताई के 'अ - सुर' विलाप-प्रलापों के बीच कविवर श्री राजेन्द्र चान्द्रायण जी द्वारा विरचित "राम रसायन में सूर-तुलसी-मीरा-मैथिलीशरण गुप्त के स्वरों का गुंजन सुनने को मिला, बहुत दिनों बाद। वे मेरे लिये धन्यवाद और साधुवाद के सुपात्र हैं।

डा० न० चि० जोगलेकर
विश्व भारती : शान्ति निकेतन
भोलपुर (कलकत्ता)

मैने प्रस्तुत काव्यपुष्पी 'श्री राम रसायन' प्रकाशन के पूर्व आद्योपांत पढ़ी; और पढ़कर मुझे बहुत हर्ष हुआ। सचमुच में यह 'श्री राम रसायन' है। इसमें रामभक्ति रूपी रसायन पवित्र भावनाओं से ओत-प्रोत है। इसमें कुल ९ सरणियां हैं जो सचमुच उनके शीर्षकानुकूल काव्यधारा की स्त्रोतस्विनी को बहाती हुई बरबस रसिक पाठक को उसमें अवगाहन करने की स्वाभाविक प्रेरणा देती है। पाठक इसमें सद्यःस्नात होकर कह उठेगा :—

"राम तान के गान सुनाने,
रामकलित जग तक आया हूं।
राम-रागिनी अविरत गाता,
मंगलदीप ज्वलित लाया हूं।।"

इसका कवि विनम्रता से कह उठता है कि :—

"अरे ! ओ !! जगमीत !!! न रोको मुझे,
मैं रघुराय की राह पर जा रहा हूं"

जिसको 'पीर - पराई टेरती है,' उसकी काव्य-प्रतिभा का क्या कहना ? वह तो 'शुचि मानवता-हित-चिंतन' में सदैव लगा है। मैं इस कृति का भव्य स्वागत करता हूं। आपकी यह काव्यगंगा निरन्तर झरती-बहती रहे।

डा० शिवनारायण खन्ना
एम-ए०, साहित्यरत्न
डिप० लिब० । पी-एच०डी०
(हिन्दी संस्थान से सम्मानित विद्वान)
कलकत्ता

यह प्रेरक प्रस्तुति सचमुच ही 'राम—रसायन' है। बस रामहि-राग उचारा करू",
टूटे बताशे की चाह,
सद्मन ओढ़ो राम—रजाई',
'कविबीर सुगीत सुनाते रहो',
'नदी—नाव', एवं 'श्रीराम तुला' नाम्नीय रचनाएँ मन को बहुत भाईं।

सर्व-श्री चक्रधर बहुगुना
संचालक
अन्तरराष्ट्रीय संस्कृत साहित्य समिति
(हिन्दी संस्थान से सम्मानित विद्वान)
[देहरादून]

प्रस्तुत—रसपूरित काव्य पुष्पी–'श्रीरामरसायन'परिमार्जित प्रारंभ से अन्त तक अतिसुन्दर है। इसको पढ़कर सहसा भान सा होता है कि लेखक कहीं हनुमान जी का ही अवतार न हो?

डा० चक्रपाणि
पी—एच० डी०
['दनौघा-बीर' खण्ड काव्य के रचयिता]
रायबरेली

'श्री राम रसायन' मैंने कई बार पढ़ा, बार-बार पढ़ा और भाव-विभोर हो गया। आपने खड़ी बोली, अवधी आदि हिन्दी की विभिन्न प्रतिकृतियों के माध्यम से जो भाव-चित्र संजोये हैं उनमें "कणे-कणे रमन्ति इति रामः की अद्भुत झांकियां देखकर मैं कृतार्थ हो गया। सचमुच आपके माता पिता धन्य हैं जिन्होंने इस युग में आप जैसा 'भक्त पुत्र' प्राप्त किया।

कविवर
डा० जगदीश बाजपेयी
पी—एच०डी००
मुजफ्फरनगर

'श्रीरामरसायन' एक परम मांगलिक [र]चना-रसायन है, जो अपने शीर्षक [क]ी सार्थकता को अक्षरशः सही सिद्ध [क]रता है।

डा० नारायणदत्त जोशी
चीनपुर : नैनीताल
(हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत विद्वान)

कृति को अद्यांत पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। श्रीराम के जीवन-दर्शन को सहज रूप में प्रस्तुत करने का यह विशिष्ठ प्रयास हैं। अभिनव साहित्यिक प्रयोगों ने मन मोह लिया है। बधाई।

कवि-श्री डा० उमाशंकर वर्मा
पी—एच० डी०
महेन्द्रू,-पटना (बिहार)

यह 'श्री राम-रसायन' तो नित्य ही पठनीय है। पंक्ति-पंक्ति में आप की श्री राम-भक्ति का सागर लहरा रहा है। साधुवाद।

डा० रमाशंकर 'चंचल'
पी—एच० डी०
इलाहाबाद

कवि चान्द्रायण की काव्य-चेतना का सुफल 'श्रीराम रसायन' आध्यात्मिक कृति वह पवि साहित्य-सलिला है जिसमें अवगाहन क वैतरणी पार कर जाने को भरपू सामग्री है। सरल सुबोध संस्कृतनि शब्दों में काव्यांजलि के ताने-बाने बुन श्री चान्द्रायण जैसे काव्यचतुर कारीग की ही करामात है।

डा० लक्ष्मी नारायण दुबे
पी- एच० डी०
सागरविश्वविद्यालय (मध्य प्रदेश)

प्रश्नगत कृति पढ़ी श्री चान्द्रायण काव्यप्रतिभा शक्ति के धनी सिद्ध होते हैं। उनका भावाच्छादि कविरूप उनको भक्ति चेतना का अनुगायक बनाता है। वे मूलत: गीतिकार हैं उनका काव्य पर अधिकार-स्वत्व है। वे आध्यात्मिकता को सुन्दरता के सा जीवन के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत काव्य कृति की प्रासंगिकत रेखांकित करने योग्य है, क्योंकि इसमें हरिजन समस्या को भक्ति-क्षेत्र की व्याप्ति में उपस्थित किया गया है। यह एक स्तरीय एवं उत्कृष्ट रचना है। यह जीव तथा ज्योति की आलोक-बिन्दु है। यह रचना भावकों का गलहार बनेगा।।

कवि-श्री डाक्टर रामेश्वर दयाल दुबे
पी-एच० डी०, लखनऊ
[पंचवटी खण्ड काव्य के रचयिता

प्रस्तुत कृति में पदे-पदे कवि चान्द्रायण की अगाध आस्तिक श्र दृष्टिगोचर हो रही है।

काव्य में श्रद्धा की भावभूमि पर जब शब्द एक दूसरे के निकट आ बैठते तब भावों के सुमन सहज खिल उठते हैं। यथा:—

"गुरु के पद पंकज ध्यान लिये,,
मन राम रमा में रमा रहा हूं।

कवि ही की दो पंक्तियों को उद्धृ कर उनके ही अन्तर्कवि के प्रति अपनी मंगल कामना प्रदान कर रहा हूं :—

"सदकाव्य की धेनु चराते रहो,कविबीर ! सुगीत सुनाते रहो।"

कविवर डा० गणेशदत्त 'सारस्वत'
पी–एच० डी०
(सीतापुर)

इस उत्तम रचना के लिए मैं कवि चान्द्रायण को बधाई देता हूं।

श्रीगोपाल मिश्र
संचालक मानस चतुश्शती संघ, इलाहाबाद

काव्य-गरिमा में आप 'चान्द्रायणी' के चन्द्र हैं, परन्तु भक्तवत्सलता में आप 'श्री राम-रसायन' के 'रसखान' हैं।

डा० हरिगोविन्द सिंह
पी-एच० डी०
(राठ, हमीरपुर)

कृति भक्तिभाव से परिपूर्ण है। जिसके पास 'राम-रसायन' हो वह राम का दास क्यों न हो ? कहीं-कहीं कबीर की सी गूढ़ वाणी हो गई हैं। पुस्तक का पंचम और षष्ट प्रवाह किसी अनुष्ठान से अनुप्राणित प्रतीत होता है।

कविवर सुन्दरलाल 'अरुणेश'
सदस्य काशीनागरी प्रचारणी सभा
(बाराबंकी)

'श्री राम रसायन'
में रामकीर्ति को सुन्दर छन्दों में निबद्ध करने का सफल प्रयास किया गया है, जो सराहनीय है। भावों की नवीनता के कारण पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय बन गई है।

पुस्तक में सवैया छन्दों के कारण और भी चार चांद लग गये हैं।

डा० मनमोहनस्वरूप माथुर
पी–एच० डी०
पानीपत (हरियाणा)

अवधी एवं हिन्दी के मिश्रित रूप में वर्तमान संक्रान्ति युग में राम-भावना-युक्त यह काव्यपुष्प जन-मानस को संचेतित करने वाला है। यह 'संस्कार-मानस' का निर्माण करने वाला ग्रंथ अवश्य है। भक्ति-अभिव्यक्ति का मैं इसे सुन्दर नमूना मानता हूं।

डा० रामकिशोर
एम० ए० डी० फिल०
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, (प्रयाग)

'श्रीराम-रसायन'

कृति में भक्ति-का आवेग बड़ा ही तीव्र है। यह एक पठनीय सद्ग्रंथ है।

श्रीवर्य एस० पी० पाण्डे
एम० ए० आई० आर० एस०
सेन्ट्रल गवर्नमेंट
नई दिल्ली

मेरी राय में 'राम रसायन' आपकी सधी हुयी साहित्यिक यात्रा का रसपूरित प्राथमिक पड़ाव है। नजर आपकी कहीं बहुत आगे के लक्ष्य पर है। हर साहित्य-प्रेमी इसे रामकाव्य-परम्परा की एक अविस्मरणीय कड़ी के रूप में सदा याद करता रहेगा।

डा० भगवान दीन मिश्र
सागर विश्वविद्यालय
(मध्य प्रदेश)

आज के इस भौतिकतावादी युग में त्रास-संत्रास, 'कूड़े-कचड़े' एवं आम आदमी आदि की ही चर्चा करने वाले कवियों के मध्य राम-रस से ओत-प्रोत —'श्रीराम-रसायन' काव्य-कृति लिख कर श्री चान्द्रयण जी ने न केवल चमकृत किया है, अपितु रस-सिक्त भी किया है। मैंने इसे आद्योपांत पढ़ा और पाया कि कवि ने अपने भावुक भक्त मन की अकृत्रिम भावुकता को काव्य के धरातल पर सशक्तता से व्यक्त किया है।

प्रोफेसर रमेशचन्द्र शास्त्री
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

मर्यादा—पुरुषोत्तम श्री भगवान राम के प्रति आपकी श्रद्धा-भक्ति-प्रीति एवं हृदयोद्गार प्रशंसनीय हैं।

'श्री राम रसायन' कृति प्रसाद गुणसम्पन्न; स्वाभाविक प्रवाहमय भाषा में उपासक का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण व समर्पण भावना से परिपूर्ण है

निःसन्देह भक्तजनों को यह रसायन आत्मबल प्रदान करेगा।

श्रीवर कुंवर सुरेश सिंह जू
कालाकांकर
प्रतापगढ़

(प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कविवर पंत जी के अभिन्न हृदय मित्र)

श्री-राम-रसायन दो बार आद्योपांत पढ़ा। बड़ी सुन्दर और भावपूर्ण रचना है। कथा पुरानी है परन्तु आपने उसमें प्रेरक नवीनता लाकर एक नया आदर्श पाठकों के सामने रक्खा है।

श्री सीता जी विषयक सवैये बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। बधाई।

राजर्षि काव्यर्षि
श्रीयुत राजा रणंजय सिंह जू देव
अमेठी राज
(अध्यक्ष आर्य समाज)

प्रस्तुत संतुलित एवं सारगर्भित रचना के लिये मुहुर्मुहः धन्यवाद। आपकी साहित्यक सेवा सर्वथा सराहनीय है। शुभाशीष।

कविवर शारदा प्रसाद भुसुंडि
(वाल्मीकि रामायण के हिन्दी पद्यानुवादकार)
लखनऊ

"चान्द्रायण' ने राम पर जो कुछ लिखे विचार।
उनमें पाठक को मिला, चरम भक्ति का सार॥"

आचार्य बलराम शास्त्री
बनारस

आर्य कवियों ने राम को अनादि-अनन्त, अलख, निर्गुण-निर्विकार, निराकार, परमब्रह्म माना है, और महाराज दशरथ के पुत्र के रूप में भी स्वीकारा है।

(१) "रमन्ते क्रीडन्ते योगिनो यस्मिनिति रामः"।

(२) 'दशरथ स्यापत्यं पुमानिति रामः'।

श्री राम रसायन में भी दोनों सिद्धान्त माने गये हैं।—"जनकजा से बढ़कर सीता राम से बढ़कर केवल राम" की उक्ति बहुत सुन्दर बन पड़ी है। इस विषय पर आपकी यह अन्तिम कृति नहीं है, वरन पहली कृति है। इसके 'पात' बहुत चीकने एवं होनहार हैं। आपको अभी काव्य क्षेत्र में बहुत कुछ करना है। 'रामरसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा।' कृति के प्रति कृतज्ञ हूं।

आचार्य होरीलाल शास्त्री 'सरस'
अध्यक्ष सांस्कृतिक परिषद,
सम्पादक 'कृषक-सुधा'
गोला गोकर्णनाथ (खीरी)

'श्री राम-रसायन' पुस्तिका का प्रारम्भ ही 'रामल-उजियारी' से हुआ है, जो सर्वथा तम-बेला का समापन करने वाली है। करुणा से ओत-प्रोत कवि का सम्पूर्ण जीवन भक्ति से सराबोर हो गया है। यथा:—

"अब लाल औ' श्वेत को देख लिया,
परा-बैंगनी वृत्ति बना रहा हूं।
अरे! ओ!! जगमीत!!! न रोको मुझे,
रघुराय-की-राह पै जा रहा हूं।।"

[रामरसायन : अन्तिम सरणि]

दोहा—-दुग्ध-सरणि 'श्री सीय-सरणि', 'टूटे बताशे की चाह,' के अतिरिक्त 'हरिजन', 'साकार-निराकार,' 'नवनीत' एवं ॐ का आध्यात्मिक रसबोर विवेचन बहुत पसन्द आया।

ॐ की इतनी विशद व्याख्या अन्यत्र दुर्लभ है। कवि कबीर जी की इस वाणी को चरितार्थ कर रहा है कि—

"साकत मरैं संत जन जीवैं, भरि-भरि रामरसायन पीवैं"।

कविवर डा० रामदास पान्डे 'गम्भीर'

पी—एच० डी० (फिल०)
सिविल लाइन्स, बस्ती

श्री राम-रसायन'

काव्यकृति में ज्वलित मंगलदीपों की मनोहारी आभा है जिसमें कवि की तम-वेला दूर हो चुकी है । कवि को:—

...'बस रामहि राम उचारा करूं ।'
...'रामार्पित टूटा बताशा बनूं'
...'मेरी नस-नस में प्रिय हे !
'बस राम-राम बहने दो'

की कामना रह गयी है। अन्तराराम कवि 'असली हरिजन' को परिभाषित करता है ।

ऊं और राम का समन्वय दृष्टव्य है । दोहों की दुग्ध-सरिता भी पावन-मनभावन है । कवि ने समापन सरणि में अस्तित्व की सार्थकता (सिगनीफिकेन्स आफ इकसिसटेंस) का सजल संकेत किया है ।

कविवर शीलेन्द्र कुमार 'वशिष्ठ'

गिरिडीह (बिहार)

श्री राम-रसायन

एक साहित्यक एवं सुन्दर प्रस्तुतीकरण है। कृपया प्रस्तुत कृति के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकारें ।

कविवर श्री रामनाथ 'सुमन'

मल्लावाँ, हरदोई

श्री राम रसायन पुस्तक कविता की दृष्टि से बहुत अच्छी काव्य रचना है ।

कवि की रामभक्ति थोथी गुनगाथा नहीं है वरन् वह अधुनायतन परिपेक्ष्य में समाजोन्मुखी एवं जनमुखीन तथा विमर्शमनीन भी है। यथा कवि द्वारा प्रस्तुत 'हरिजन' की व्यापक परिभाषा अवलोकनीय है:—

''महातेज लोकाभ लुटावे
जन-जन में नव जागृति लावे।
धूम्र-सदृश जो इकरस छावे
बन परसेवी सबहि सुहावे।
राम-रमा में जो रम पावे
जो समाज सेवा उर लावे।
हरिजन वही जो शुचि मन पावे
हरिजन सुभग समाज सजावे।,,

कवि राम भक्ति के साथ-साथ समाज की जागृति भी चाहता है। यह भाव कवि के हृदय की साफगोई एवं उदारता का असंदिग्ध परिचायक है।

कविवर अनन्तराम मिश्र 'अनंत'

गोलागोकर्णनाथ (खीरी)

इसमें कबीर और तुलसी दोनों के 'राम' समन्वित हो गये हैं, जो साथ ही कवि की उस मनोदशा का इंगित करते हैं जिसमें तत्वतः अन्ततः 'अद्वैत' ही शेष रह जाता है। अनेक योगिक क्रियाओं का सूक्ष्मभेदी सांकेतिक वर्णन इस कविता-कुंज को कबीर-काव्य की श्रेणी में पहुंचा देता है ।

कतिपय वेदप्रवर विद्वानों के मत:--

डा० रामनाथ वेदालंकार
पी०-एच० डी०
(वैदिक साहित्य के विरल विद्वान)
नैनीताल

जहाँ तक कवित्व तथा भक्ति-रस का प्रश्न है, कवि चान्द्रायण ने दोनों का निर्वाह बड़े सुन्दर रूप से किया है, किन्तु हम आर्यसमाजी लोग रामनाम से ईश्वर-भक्ति में कुछ सकुचते हैं, क्योंकि इससे दशरथ-तनय का ग्रहण हो जाता है।

डा० फतेहसिंह
(डी० लिट०)
[वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान]
पीलीभीत

आपको 'राम-रसायन' भेंट
चित्त की चारु सुधीर—चपेट।
जला सीता का शोभा दीप
लगी लहराने स्वर्णिम नीप ॥

जग में लही प्रसिद्धि, राम को ॐ नाम बतलायो।
स्वस्ति-सिंधु में डूबि, रामरस-रंजित घन घहरायो ॥

डा० ओमप्रकाश वेदालंकार
पी०-एच० डी०
भरतपुर (राजस्थान)

'श्री रामरसायन' प्राप्त हुआ। पढ़कर आनन्दानुभूति हुई। भगवान श्री राम के प्रति यह विनयांजलि रूपी प्रस्तुति सब के हेतु प्रेरणाप्रद हो, यही कामना है। भावबोध उत्तम है।

आचार्य सुरेशचन्द्र वेदालंकार
पी—एच० डी०
गोरखपुर भरतपुर (राजस्थान)

'श्री राम-रसायन' के पीने से, "अब अन्त हुई तम वेला' और मन के 'मंगलदीप' जलने लगे। 'भाव-बोध' उत्तम है।

इस कीर्ति-काव्य की कई कवितायें बहुत अच्छी लगीं। "असली हरिजन कौन ?", 'नदी-नाव', 'साकार-निराकार', 'अन्तिम आत्मानुभास', आत्मनिवेदन', 'मुझे पीर-परा अब टेरती है" शीर्षक कवितायें बहुत अच्छी लगीं। श्री राम-रसायन पीने से मंगम दीप जलने लगे।

वेदवेत्ता डा० व० प्र० पंचोली
पी—एच० डी०
सम्पादक 'वेद सविता'
अजमेर

'श्री राम-रसायन' की प्रति मिली ! आप समर्थ लेखनी के धनी हैं। दिव्य पुरुष राम की प्रशस्ति को आपने बड़ी सशक्त् शैली में प्रस्तुत किया है।

'श्री राम-रसायन' सचमुच अनुपम रसायन है। इस युग में भी मन को सत्त्व में रमाने वाली इतनी सुन्दर रचना करके आपने अपनी काव्य प्रतिभा का सदुपयोग किया है।

रामकाव्य की परम्परा में 'श्री राम-रसायन' अपना अक्षय स्थान बना सके, ऐसी मेरी मङ्गलकामना है। आपको बधाई अर्पित करता हूं।

श्री राम रसायन: प्रेस की दृष्टि में

हिन्दी विश्व दर्शन

दिल्ली

'श्रीराम-रसायन' एक अभिनन्दनीय कृति है। उसमें 'अचित' का आवरण भंग कर 'चित-तत्व' को प्रकाश में लाने की क्षमता है......ऐसी कृतियों का भविष्य अवश्य मंगलकारक होता है।'

मानस भारती

भोपाल (मध्य प्रदेश)

इस ९ सरणियों वाले प्रबन्ध काव्य में मुक्तक का भी रस है। सारा ही काव्य छन्दबद्ध है। जहां तक विचारों और अनुभूतियों का सम्बन्ध है, पुरातन के साथ अधुनायतन विचार धारा भी प्रतिबिम्बित है। "असली हरिजन कौन' ?" रचना इसका ज्वलंत प्रमाण है। रचयिता ने एक भक्तहृदय पाया है और एक समर्पित कवि की प्रतिभा भी।

मधुर लोक

दिल्ली

स्वान्त:सुखाय काव्य रचना करने वाला यह कवि, स्व—प्रशस्ति से कोसों दूर, स्वयं के प्रति निरपेक्ष,अपने अध्ययन और अनुभूति द्वारा भारतीय आदर्शों को 'श्री राम-रसायन' द्वारा जन-जीवन में निखार रहा है। आत्मप्रचार से दूर रहने वाला यह कवि, प्रकृति-सौन्दर्य प्रधान कविताएं, मानवतावादी कविताएं, एवं आध्यात्मिक कविताओं की सर्जना में सफलत: रत हैं। श्री चान्द्रायण जी

अपनी रचनाओं में एक सुस्पष्ट सात्विक उद्देश्य लेकर चलते हैं। वह संस्कृत-निष्ठ शैली में अपने विचारों को रखते हुए भी, उससे बंधे नहीं रहे अपितु नए-नए प्रयोगों में प्रवाहमयी भाषा अपनाते गये हैं। भाषा-सौष्ठव प्रशंसनीय बन पड़ा है। शुद्ध खड़ी बोली और हिन्दी भाषा की शुद्धता विशेष आकर्षक बन पड़ी है। लोकगीतों की भाषा भी अपने ढंग की निराली है। आध्यात्मिक भावों का यह चतुर-चितेरा शतायु हो।

श्री-श्री १००८ रचस्तिमूर्ति
स्वामी सीताराम जी महाराज
लक्ष्मण किलाधीश, सम्पादक 'अवध संदेश'
अयोध्या धाम

श्री 'राम-रसायन' ग्रन्थ मिला। अत्यन्त प्रसन्नता हुई, विशेषकर श्री जानकी जी की स्तुतिपरक कविताएं पढ़कर। आपका प्रयास स्तुत्य एवं प्रशंस-नीय है।

हम आपकी यह रचना "अवध संदेश" में शीघ्र ही क्रमशः प्रकाशित करेंगे।

आचार्यरमेशचन्द्र अवस्थी
सम्पादक 'आर्यमित्र'
लखनऊ

श्री राजेन्द्र चान्द्रायण भावना प्रधान कवि हैं तथा उनमें रवीन्द्रनाथ टैगोर के समान अध्यात्मवादी भावना को कोमल परिवेश प्रदान करने की क्षमता है तथा उनकी अनुभूति की तीव्रता हृदयस्पर्शी है। कविवर राजेन्द्र जी में सभी विधाओं में कविता करने की क्षमता है। मंगलमयी बधाई।

श्री अखिल विनय

अन्तर्राष्ट्रींय संयोजक

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी संस्थान एवं प्रसिद्ध पत्रकार,

बम्बई

प्रस्तुत 'श्रीराम-रसायन' की ९ सरणियों के माध्यम से आपने श्रीराम भगवान की यशोकीर्ति का वर्णन प्रस्तुत करके, एक अनुपम साहित्यिक प्रयास किया है।

मुझे विश्वास है कि यह काव्यग्रन्थ काव्यजगत में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। हार्दिक शुभकामनाएं।

कवि-श्री कलाकुमार जी

सम्पादक

'साहित्यिक संदेश', 'अमर-भारती'

लखनऊ

वैदिक संहिताओं से लेकर पुराणों, महाभारत, बाल्मीकि रामायण, अध्यात्म-रामायण, तुलसीकृत रामायण एवं बोद्ध-जैन ग्रन्थों तथा अन्य अनेकानेक रामायणों एवं स्वस्तिपाद रामानंद जी जैसे कालजयी धर्मगुरू द्वारा प्रवाहित राम-भक्ति-धारा की प्रांजल कड़ी के रूप में प्रस्तुत काव्यकृति श्री 'राम-रसायन' का अपना स्थान हिंदी साहित्य में अक्षुण्ण है। इस काव्यांजलि के माध्यम से सुकवि चन्द्रायण ने भगवान राम के प्रति विनत भक्ति-भावना की संजीवनी-सुधा प्रश्रवित की है।

कवि अपने को केवल 'राम-देवल का 'टूटा बतासा' मात्र मानता है। उसके लिए कलिकाल के निस्तार हेतु राम-नाम ही परम आधार है। भाव-प्रवाह, भाषा, ऋतुजा, शब्द लालित्य एवं अभिव्यक्ति की चारुता की दृष्टि से यह एक सफल काव्य-कृति है।

।। श्री गणेशायनमः ।।

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन ।"
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन ।"

'महाप्राण निराला'

● 'केशव' काम के राम बिसारत, और निकाम के काम नए हैं ।
चेति ! रे चेति !! अजौ चित अंतर, अन्तकलोक अकेलोई जैहैं ।।

'केशवदास'

● प्रिय नामने राम के, कामने रामके, आप ही राम किया मुझको ।
गतिजो अविराम अनादि से थी, उसका ही विराम किया मुझको ।।

'हितैषी'

॥ श्री हरिः ॥

विनीत-बचन

निःसन्देह विमलातिविमल रामकीर्ति रूपी रसायन सुन्दर-ही-सुन्दर है। भगवान व्यास जी ने श्रीमद्भागवत पुराण के ग्यारहवें स्कन्ध में; चतुर्थ अध्याय के श्लोक २१ के द्वारा श्री राम को 'लोकमलघ्नकीर्तिः' के विशेषण से विभूषित किया है।

बाल्मीकि रामायण में स्वयं परमाराध्या श्री-स्वरूपा सीता जी ने श्री राम को 'सबके प्रिय, बलिष्ठात्मा, प्रत्युत्पन्नमतिमान् एवं सर्वदा 'सज्जनसंज्ञ' के रूप में अभिसंज्ञित किया है, और उन्हें पुरुषार्थ, धर्म, दया, कृतज्ञता, प्रणवत्ता एवं पराक्रम की मूर्ति बताया है। कपिराज बाली ने भी उनके दम, शम, क्षमा, धृति, धर्म सत्यपराक्रम, सम्यक्‌ दंडदान, सानुक्रोशता, समयज्ञता, दृढ़वत्ता की प्रभूत प्रशंसा की है। श्री समीरलला हनुमान जी ने भी श्रीराम को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर, सत्यप्रतिज्ञ, शत्रु संतापी, अभिभावक, भक्त हेतु शरणवत्सल, संस्कृति रक्षक और समर्थ स्वामी के रूप में पूजा हैं।

श्री राम में अनिद्य पत्नीव्रत; अद्यूतशीलता, अनहंकार, सुशील-सदाशयता, नशाहीनता, मौलिक दृढ़प्रतिज्ञता, पौरुषता, सत्यता आदि ऐसे अलभ्य चारित्रिक गुण पाए जाते हैं, जो हरेक सदाचार-अभिलषित मानव का मन मोहे बिना नहीं रहते। युगपुरुष महात्मा गांधी जी भी श्री राम-नाम-रसायन के सबल जापक थे और कम ही लोगों को मालूम है कि सोते समय भी राम-नाम की रुद्राक्ष-माला उनकी तकिया के नीचे रहती थी।

लौकिक पक्ष में श्री राम के प्रति शताधिक विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, परन्तु उनमें से परम व्यापक शब्द 'मर्यादा पुरुषोत्तम', 'मानवेन्द्र', 'नियतात्मा' 'महार्य,' 'रामभद्र' एवं 'पुरुषपुंगव' सर्वसारग्राही हैं।

श्रीराम शुद्धबोध, सत्यबोध, समत्वबोध, आत्मबोध, लोकबोध, विश्वबोध के अनन्य भावक हैं। वे भू-भारति के एक अनभेद्य महाप्रश्न हैं। वे दलितों, दुखियों, हरिजनों एवं भक्तों के सदा-सदा 'मृदुलतम मसीहा' रहे हैं और रहेंगे।

भारतीय वाङ्मय में सम्पूर्ण वैराग्य, श्री, यश, धर्म, ऐश्वर्य, ज्ञान नामक छः 'भग' कहे गए हैं। शास्त्रानुसार इनमें से यदि एक भी 'भग' जिस किसी के पास हो, वह भाग्यवान 'भगवान' कहलाने का अधिकारी होता है। श्रीराम—कीर्ति में यह सभी गुण अपने परमोत्कृष्ट रूप में वर्त्तमान हैं। वे मनुस्मृति में वर्णित दसों-यम-नियम-तत्वों एवं 'शुचिता', 'मुदिता''अमिता', के नान्य निष्णात प्रमाण हैं। उनका विपुलांश वैभव अगम्य अनन्त है। इसी से वे अलोकिक पक्ष में 'भगवान' कहाए हैं।

प्रातः स्मरणीय दशरथ के समय के ग्यारहों सुप्रसिद्ध ऋषियों का श्रीराम को समवेत रूप से अजस्र आशीष प्राप्त करने का अलभ्य श्रेय है। उन्हें ब्रह्मविद्या, ईशित्व-वशित्व, बला-अतिबला, बाजपेय विद्या, सञ्जीवनी शक्ति, एवं 'आत्मिकी-आध्यात्मिकी' की सकल सिद्धि थी। उनकी लीला-चातुरी अकथ-अथाह है। उदाहरणार्थ उन्होंने अपने प्रबलतम शत्रु रावण को ही रणसंगर—पूजन के समय अपना पुरोहित बनाया और वहीं वह शिवेश्वर की पूजा सम्पादित करते हुए भी स्वयं 'रामेश्वर' बन बैठे।

श्री राम षटगुणों, एवं दशों वर्ग-विभागों के एकल ज्ञाता-भोक्ता हैं। वे ज्ञात से श्रेष्ठ एवं अज्ञात से सर्वथा अलिप्त हैं। वे ही प्राणमय, मनोमय, विज्ञान-मय, आनन्दयय कोश के शाश्वत स्नेही सखा, एवं सर्वोच्चिक स्वामी हैं। वही एकल विश्वात्मन्, आप्तकाम—मृत्युंजय, विपुलांश श्रीवत्स, प्रभविष्णु अहमर्थवान, सर्वसंज्ञ महाप्राज्ञ, सर्वांतरयामी आनन्दकंद, अज्ञेय, निरामय, अतीन्द्रिय विश्वप्राण-स्वरूप हैं।

श्री राम से भी बड़ा उनका नाम—रसायन है। श्री राम-रसायन का आस्वादनानंद 'अजपाजप' प्रभुस्मरण में ही सन्निहित है। उनकी कीर्ति-पताका ज्योतिश्चुंबिनी पराशक्ति की दिव्यतम द्योतिका है।

श्री राम भारतीय मनीषा के परमोज्वल आलोक बिन्दु हैं। वही ज्ञान-विज्ञान के एकमेव आदि वक्ता—स्रोता हैं। वह जहाँ पैदा हुए, जहाँ-जहाँ उनकी पद-रज बिखरी, वहीं-वहीं एक तीर्थस्थल बन गया। वह जो बोले, वही जन-जन का लोक-शास्त्र बन गया। मानवता, सौमनस्य, एवं विश्वबंधुता के प्रतिपादन हेतु वह रवि-सोम के सदृश व्योमव्याजस्वरूप परमोच्चिक त्रिकालदर्शी आदर्शलोक हैं, सदा रहेंगे।

प्रस्तुत रामकीर्ति-पुष्पिका की 'समन्वय-सरणि' नामक खण्ड में भगवान राम और उनकी परम शक्ति सीता एवं उनके निर्विशेष स्वरूप के वाचक 'ओंकार-तत्व' के सम्बन्ध में समन्वयात्मक कथन करने का कुछ बाल प्रयास-सा किया गया है। भगवान राम परमेश्वर परात्पर ब्रह्म हैं, इसके अनेक प्रमाण आर्ष ग्रन्थों में मिलते हैं। यथा :—

"राम एव परं ब्रह्म, राम एव परं तप:।
राम एव परं तत्त्वं, श्री रामो ब्रह्मतारकं॥"

[रामरहस्योपनिषद]

अर्थात राम ही परम ब्रह्म हैं, राम ही श्रेष्ठ तपस्या है। राम ही परम तत्त्व हैं तथा श्री राम ही तारक ब्रह्म हैं। इसी प्रकार स्कंधपुराण में भी राम-नाम-सार की अमित महिमा प्रतिपादित है। आप्त ग्रन्थों में यह भी कहा गया है :—

"रमन्ते योगिनोऽन्ते सत्यानन्दे चिदात्मन
इति रामपदे अनुनासे परंब्रह्मा अभिधीयते।"

अर्थात जिस अनन्त सत्-चित्-आनन्द परमात्मा में योगी—जन रमण करते हैं, जिसका ध्यान लेते हैं, वही परमब्रह्म परमात्मा राम-नाम से विख्यात है। भगवती सीता देवी ही राम की पराशक्ति हैं। दोनों नित्य दो रूप हैं, परन्तु तत्त्वत: नित्य एक ही हैं। "द्वौ चानित्यं द्विधा रूपं, तत्त्वतो नित्य एकता"। इसी लिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है :—

"गिरा अरथ जल बीच सम
कहियत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीता — राम — पद
जिनहिं परम प्रिय खिन्न॥"

'श्रीराम-तापिनी' में भी यह कहा गया है कि, "श्री राम सानिध्यवशाज्जगदानन्ददायिनी। उत्पत्ति स्थिति संहारकारिणी सर्व देहिनाम्। सा सीता भगवती ज्ञेया मूल प्रकृति संज्ञिता। प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिन:।" तात्पर्य यह कि भगवती सीता मूल प्रकृति है। इसी सीता नाम से अभिधेय मूल प्रकृति में सृष्टि के निमित्त जो क्षोभ की ध्वनि उत्पन्न हुई, उसी को 'प्रणा' या' ओंकार' कहते हैं। इसी

'प्रणा' को 'मैत्रायिणी' में ब्रह्म का 'शब्द' शरीर भी कहा गया है। इसके द्वारा ब्रह्म के निर्गुण, निराकार, निर्विशेष स्वरूप का बोध होता है। कबीर आदि सन्तों ने इसी को 'शब्द' कहा है। अनाहत-नाद के रूप में योगी-जन इसी की कुछ मधुर झंकृतियों को सुनते सुनते तल्लीन होकर 'आत्मबोध' गति की सम्प्राप्ति करते हैं। इसी ओंकार से त्रयीविद्या की उत्पत्ति हुई। वस्तुतः यह दिव्य भागवत-पद की प्राप्ति के लिये, गुरूमार्ग-दर्शन के सहारे, एक अद्भुत सोपान है। वह समस्त प्रकाशमय पदार्थों का प्रकाश स्त्रोत है। कणे-कणे रमन्ति इति रामः।

युगुलमूर्ति श्री राम एवं सीता की कीर्ति-कौमुदी सापेक्षतः मिलजुल कर एक अनुपम सतत संवेदनशील, सापेक्ष सात्विक प्रश्नोत्तरी है। सामाजिक सात्विकता एवं साहस के धरातल पर श्री राम एक 'महाप्रश्न' हैं और परमवंद्या सीता 'महोत्तर' हैं। इस विलक्षण प्रश्नोत्तरी का जिज्ञासात्मक सिलसिला शाश्वत है अर्थात 'प्रश्न' 'उत्तर' को उपजाता है और 'उत्तर' प्रश्न को उपजाता है। श्री रामकीर्ति के इसी पावन पुनीत गांगेय प्रवाह में एक अजस्त्र जीवंत जिजीविषा सन्निहित है, जो हर मानव का स्वाभाविकतः बरबस मन मोह लेने में समर्थवान हो उठती है। इसी शुभेक्षु कारण से वे प्रतिपल प्रणम्य हैं। तदभावेन राम, सीता और ओंकार के इस पारस्परिक सम्बन्ध को प्रश्नगत 'समन्वय-सरणि' में अभिव्यक्त करने का विनत प्रयास किया गया है।

श्री राम सदैव अप्रश्न रहे और जब वह सप्रश्न हुए तो तत्काल उन्होंने स्वेच्छा से अपना स्वर्गारोहण खुद-ब-खुद सम्पन्न किया। वह स्वयं अपने स्वार्थों के प्रति कभी प्रतिबद्ध नहीं हुए। श्री सीता 'धरित्री-धीर' की अद्वय प्रतीक हैं। वह श्री राम की गुणज्ञ गीतगुंज हैं। हर भारतीय सुशीला नारी सीता-चरित्र को आचरित करने को आज भी लालायित रहती है।

श्री राम कीर्ति में शिवसंकल्पबोध, आत्मबोध, शुद्धबोध, विश्वबोध, का आदर्श ओज-ओप निर्झरित होता हैं इसी बिचार-बिन्दु से समकालीन युग-बोधमयी परिकल्पनाएं एवं उनका सात्विक समाधान निःसृत होता रहता है, क्यों कि आज भी वही सामाजिक दुर्दंभ-दुरूह समस्याएं उमड़-घुमड़ रही हैं, जो 'राम रावण-युग' में थी और उनका समाधान भी वही है जो श्रीराम ने अपने विलक्षण-विचक्षण बुद्धि-वैभव द्वारा सम्पादित किया था। अतः इस अधुनायतन धावमान युग में भी श्री राम-नाम-कीर्ति (राम रसायन) का महत्व अक्षुण्ण है,

और आगे आने वाले समस्त मन्वंतरों में भी अनिवार्यरूपेण रहेगा। श्री राम-कीर्ति की महिमा आज भी विश्वव्यापी रूप से लोकप्रशंसित है।

श्री राम समुदार अडिग दृढ़ प्रतिज्ञा के चरम ज्योतिपुंज हैं। वे दो बार चाप नहीं चलाते, आश्रितों को दो बार स्थापित नहीं करते, उनके कृपापात्र को कुछ दुबारा मांगने की जरूरत नहीं रहती। वे डगमग-सी दोमुंही बातें नहीं करते। श्री राम की अमल लोकमंगलमय भावचेष्टा की मौलिकता अप्रमेय है। उन्होंने कभी किसी से कुछ लिया नहीं, सदा सबको देते ही देते रहे।

श्री सीता 'अग्निपुत्री' भी कही गयी हैं। वे 'भूमिजा' भी हैं और 'अयोनिजा' भी हैं। पावक ही पावक में बिना कष्ट के अयास समा सकती है। पावक से ही समस्त जगत-धातुएं शुद्ध होकर निखरती हैं। अतः सीता सहनशक्ति, श्रीशौर्य-सुषमा की मानक शोधाङ्क एवं 'धरित्री—धैर्य' की ध्रुवाङ्क भी मानी जाती हैं।

मैं अपनी परात्पर अनुभूतियों की जागरूकता का उत्प्रेरक स्त्रोत महामना डा० कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह जू, अनंत विभूति स्वस्तिपाद १००८ स्वामी मधुसूदनाचार्य जी महाराज (सप्त सरोवरः हरिद्वार) एवं अपने पूज्य बाबा कुं० रामदीन सिंह जी को चरम श्रद्धाभरित अन्तस से मानता हूं। डा० कुंवर जू का अतुल्य वात्सल्य मेरे लिये अविस्मरणीय एव वर्णनातीत है। उन्होंने मेरे भीतर नई साहित्यिक जीवनी-शक्ति, नवल उत्साह एवं नवीन साहित्यिक क्षमता का संचार किया। परमादरेय गुरुवर डा० लक्ष्मीशंकर जी मिश्र 'निशंक' ने मेरे २५ साल तक सोये हुये अन्तर्कवि को १९७७-७८ ई० में पुनः क्रियाशील किया और वे सदा-सदा अपने अमूल्य स्नेहिल परामर्श एवं प्रोत्साहन द्वारा मुझे आकंठ निमज्जित करते रहे हैं। ये महानुभाव सदा मेरी साहित्यिक साधना के स्तुत्य स्रोत हैं। मैं श्रद्धासह उन्हें नूनातिनून प्रणामांजलि अर्पित करता हूं।

मैं अतीव अनजान-अनगढ़-अज्ञ—सा अदना काव्यभिक्षु हूं, फिर भी बिना घनिष्ट परिचय के देश के अनेक मूर्धन्य साहित्व मर्मज्ञों,कवि प्रवरों, वेद-आध्यात्म-तत्वज्ञों एवं सम्पादकाचार्यों ने अपना अगाध मंगलाशीष मुक्तकंठ से प्रदान करके

मेरा उत्साहवर्धन किया । मैं इन सभी सुधीजनों को कोटि-कोटि नमन् शरणार्पित करते हुये, एतदहेतु अपना सौभाग्य सराहता हूं ।

प्रस्तुत काव्य पुष्पी की 'छंदना-वंदना' के बारे में एक स्वोर्जित सवैया प्रस्तुत करके सन्तोष करता हूं:—

"अलिवृंद दिगंत विहार करैं, गुन गोपि गुनैं लय-tानिन गावत ।
घन आनँद के विहरैं नभ पै, तिन्हैं डिंगल-पिंगल भाव न आवत ॥
सर-छंद छरैं अरिवृंदन को, भ्रम-फंद फँसे तिन्हैं पन्थ पै लावत ।
रस-रासि अमंद लहैं धरनी, कवि जो 'रघुनायक' के गुन गावत ॥"

कृति का वास्तविक वर्ण्य-विषय धनतेरस सम्वत २०३८ (१९८१ ई०) के अवसर पर मुद्रित हो चुका था, परन्तु अनेकानेक वैयक्तिक व्यवधानों के कारण, इसका अधिकृत प्रकाशन धनतेरस सम्वत २०३९ (१९८२ ई०) को सम्भव हो पा रहा है । इस पुस्तिका के पृष्ठ ६२ दोहा संख्या ४ का काल-परिगणन विगत धनतेरस से ही सटीक शुद्ध होगा ।

अधिकांश सुसम्मतिकार सुधीजनों ने इस काव्यपुष्पिका को 'भक्ति-काव्य' के रूप में गृहीत किया है और कुछ ने तो इसे भक्तराज समीरलला हनुमान जी की साक्षात कृपा का प्रतिफलन कहा है । मुझ जैसे अकिंचन में वैसी अनन्य भक्ति, अनहेनव समर्पण, सुजान सज्ञान, प्रकर्ष संचेतना, एवं प्रभु-परायणता कहां ? परमेश-प्रवर बस 'आपा' से बचाए ।

यदि एक मार्मिक 'हादसा' न गुजरा होता तो शायद, प्रस्तुत पुस्तिका प्रकाश में अभी न आ पाती । इसका सविस्तर खुलासा अगली कृति 'रामस्य-रामू : मानस हंस की भनिता' में ही देना शोभिक एवं समीचीन होगा ।

आज मेरे गोलोकवासी पूज्य पिताजी (कुं० रणजीत सिंह जू) की द्वितीय 'विमृत्यु-जयंती' है । उनकी दिवंगत सदात्मा की शान्ति हेतु मंगलमय कामना करता हूं । बस ! इति नमस्कारान्ते ।

काव्यभिक्षु
चान्द्रायण

राम भवन
कोटिया फतेहपुर
धनतेरस, सम्वत २०३९
तदनुकूल १४-११-८२ ई०

श्री राम रसायन

(विनय सरणि)

अब अन्त हुई तम-बेला

० जिसकी माया से जली दानवी लंका।
जिसकी दाया से बजा
सत्य का डंका ॥

मेरे मन के तम-तन्तु सघन हर लो सारे राघव !
मद माते मन मधुपों हित
ढुलकावो अभिनव-आसव ॥

० ० ०

हे राम तुम्हारी लीला, दिन-रात गुना करता हूँ।
अलबेली प्रकृति-सुछवि में
रसलीन रहा करता हूँ।

वैकाल-त्रिम्ब था उमगा, दुविधामय था मन-मेला।
रामल उजियारी दीखी
अब अन्त हुई तम-बेला

———

मंगल दीप

० रसिका एक वीण ले कर में,
करुणा-सी है
कुछ उपजाती।
कब परोक्ष-सी, कब सुदृष्ट-सी,
लोल-लहर
रहती लहराती॥

० ० ०

० उसी तान के गान सुनाने,
रामकलित जग,
तक आया हूँ।
रामरागिनी अविरत गाता,
मंगल-दीप
ज्वलित, लाया हूँ॥

———

गुरु-स्तवन

० शरणागत तेरो हौं शिष्य अरो,
निज पावन-पांव पसारिये जू !
ग्यान-गटी को लटी दुपटी मेंं,
सकारिये जु !' पै सकारिये जू !!

० ० ० ० ०

० घिरि आई घनी अध्यास चमू
दइकै गुरु - ज्ञान निवारिये जू।
जल-चन्द ज्यों नाचती है मनसा,
अब बोरिये या कि उबारिये जू !!

० ० ० ० ०

० दादुरी कूँ जल-जोति की चाह-ज्यों
अरु वायु को ज्यों संचारण आरजू।
राममयी करिये मम वृत्ति को
आइये जू ! गुरु !! धाइये जू !!

० ० ० ० ०

० स्वागत-माल समर्पित है,
अपनाइये जू ! अपनाइये जू !!
ममताहि सकारि अनंत करो,
अब नेकहु बेरि न लाइये जू !!

० ० ० ० ०

———

बस रामहि राम उचारा करूँ

○ वर-वाणी, विनायक, शुक्र सुधी
हनुमानवली का
सहारा धरूँ।
दिन राति उजास भरै, 'भनिता'
नव राग औ' भाव
सँवारा करूँ॥

○ सुविहाय निजत्व-परत्व सबै
भली 'भायप' में
मैं गुजारा करूँ।
नहि चाहत हौं अब और कछू
बस 'रामहि-राम'
उचारा करूँ॥

○ शुभ राम के नाम की खातिर मैं,
निज प्रान औ'
काय को वारा करूँ।
जल-मज्जित दादुर-सा दिन-रैनि
प्रकास तिहारा
निहारा करूँ॥

○ ○ ○

○ बनि 'भार' मों झोंकी पतूखिन ज्यों
अरुणा नव ज्योति
पसारा करूँ।
नहिं चाहत हौं अब और कछू
बस' रामहि-राम'
पुकारा करूँ॥

टूटे बताशे-की चाह

नहीं चाह रही कि मैं राजा बनूँ,
नहीं चाह रही कि मैं ज्ञाता बनूं।
नहीं चाह रही कि पताका बनूं,
नहीं चाह रही कवि बांका बनूं॥

० ० ०

लेश न लोभ लहा मन में,
किसी शोषित का दुखदाता बनूँ।
सदा चारु-सी चाह यही हिय में,
रामार्पित फूटा बताशा बनूं॥

उर-अभिलाष

० कथा ऐसी कहो न कही गई हो
व्यथा सहो जो कि
अभौतिकी हो।
सुखदा-शुभदा करो केलि सदा
सिरजो वही जो
कुछ शाश्वती हो ॥

० स्वागत 'भूल-भुलँय्याऽऽ' में आगत !
लौटने की मत
याद करो।
अहिफेन-समुद्र में तैर चले
फिर मौत से
क्या फरियाद करो ? ॥

० परिक्लान्ति में शान्ति निवेशन से
स्वर सुस्थिर हो
लहराने लगा।
दुख-दुःसह दूर भगे दिल से
सुख स्वर्णिम
पेंग बढ़ाने लगा ॥

० अति पुलकित तन्मय-मानस भी
रघुराय के
गीतक गाने लगा।
बलि और किसी की न देता कभी
कवि प्राण-प्रवीण
चढ़ाने लगा ॥

एकल चाह

ले लो सब कुछ प्रजातंत्रिके !
आस्तिकता शुचि
लहने दो,

छीनो !! यदि आस्तिकता,
नैतिकता तो
रहने दो ...

नैतिकता है यदि लेना ,
जनमुखी-भाव
चहने दो ,

मेरी नस-नस में प्रिय; हे !
बस ! 'राम-राग'
बहने दो ...

———

असली हरिजन कौन ?

० हरिजन वही जो हर मन भावे।
हरिजन वही जो 'हरि – मन' पावे ।।

० ० ०

० राम रमा में जो रम पावे,
जो समाज-सेवा उर लावे।
शुभद-वरद जन-ज्योति जगावे,
सुखद-सुभग सुमनस बनि धावे ।।
हरिजन वही जो हरिगुन गावे।
हरिजन वही जो 'हरिहर' ध्यावे ।।

० धूम्र सदृश जो इकरस छावे,
बनि परसेवी सबहि सुहावे।
सुमन सदृश सौरभ सरसावे,
प्रभा-पुंज-बनि जग हुलसावे ।।
हरिजन वही जो जी पुलकावे।
हरिजन नित जन-मन बिकसावे ।।

———

० शुभ सामाजिक सुमति जगावे,
श्रेयस की जो राह बतावे।
गीत अनश्वर सात्विक गावैं,
काव्य-कौमुदी-कुमुद खिलावे॥

हरिजन सुभग समाज सजावे।
हरिजन वही जो शुचि मन पावे॥

० महातेज लोकाभ लुटावे,
जन-जन में नव जागृति लावे।
स्वस्ति-सोम-सा सुजस कमावे,
लोक-लुभावन लाल कहावे॥

हरिजन सबका हिय हुलसावे।
असली हरिजन, 'राम' रिझावे॥

———

बड़ुवानी: सत्कविता

(अप्रकाशित काव्यायन गीत-काव्य से उद्धृत)

० 'कविता' सुषमा है सनेह-सनी ,
नहिं है तिनकौ कबहूँ अकुलाती ।
लोल-ललाम लुनाई लहै वह;
राग-उजास की पावन पाती ।।

अंचल-छोर सिकोरे, अचंचल,
लोक हितैषणा में रहै राती ।

'पूत—सिंगारी' सजी है सती,
जहिके जगवासी जनाती-बराती ।।

० सबके दुख दाहि; अनन्द लहै,
दुखिया की जुरावै व्यथामयी छाती ।
सुखिया को करै सुख दूनो सदा,
'मुखिया-कवि' में उर - बीन-बजाती ।।

हर धर्म-विचारु कै 'भाई' अहै वह;
ग्यान के गान की आदि प्रभाती ।
चिरयौवन रूप लसै 'कविता'',
'कविता' बिलसै मनिमय दिनराती ।।

———

० सिगरे जग कै सुजनी-सुमनी,
शुचि सोम-सुधा है सदा सुखरासी ।
नव भाव-विभाव की 'माई' अहै,
सब क्लेश औ' क्लान्ति करै निरवासी ।।

वितिहैं जग के शत कल्प-प्रकल्प,
नहीं परिहै कबहूं यहु बासी ।
विहरै बनवीथिनि बीच मुदा,
है चराचर की यहु साँची सुवासी ।।

० मनमानी नहीं, धर-जानी नहीं,
'बड़वानी' सजै 'बचनैस' के गाये ।
अनुशीलन; नेह उदार महा,
'कवि' लोक-पुरंजन सों मड़राये ।।

अभ्यास अनंग, सुधारि अभंग,
सुबीज 'कृती - कवि' में अंखुवाये ।
'कविता' जु ! रहै 'रचनेस' के राखे,
रुचै 'कविता' सदा राम-रचाये ।।

० ज्ञानी-अजानी-अमानी महा;
सुखसारी अहै
'कवि' कै 'वड़वानी'।

नभ-नीति - निनाद; निराला भरै,
कविता अजहूँ है
वनी 'अन-जानी'॥

राम को नाम न मेटे मिटै,
कबहूँ नहिं सूखै
समुद्र को पानी।

चमकी चपला कवि-चेतन पै;
कहलाई वही
मृदुला 'बड़बानी'॥

सहृ-मन ! ओढ़ो 'राम-रजाई'

० 'काई' में हैं प्राण
और मकड़ी में माया ०
यह नरकुल का जीव
इसी में आन समाया ०

० चलो चलें उस ओर
जिधर यामिनी अमल है आती ०
चलो चलें उस छोर
जिधर बालुका कणी है गाती ०

० ० ०

० बोलो ! बोलो !!
हे महापथिक तुम !!!
लोरी गाऊँ ?
या रुदन मचाऊं ?
पुंजीभूत 'राम-राका' में,
तुम्हे सुलाऊं ?
या,
खुद सो-जाऊं ?

० ०

० अखियाँ रहीं,
चित्त पै चिपकी ०
मिली न,
विरुज दवाई ०
अब 'चला-चली'-सी बेला,
मन ! ओढ़ो
"राम-रजाई" ०

कविबीर ! सुगीत सुनाते रहो

० रघुराय के गीतक गाते रहो ,
गुरु की जयकार मनाते रहो ।
रवानी तिहारी अतीव अनूप;
खुदा के खौफ को ध्याते रहो ।।
'मोचन' ही है काफी सखे !
औ' विमोचन पै न विभाते रहो ।
सद-काव्य की धेनु चराते रहो ।
कविवीर ! सुगीत सुनाते रहो ।

० ० ०

० कहो जी ! कहो,-कहते ही रहो;
कहने की कला को सजाते रहो ।
बहो जी ! बहो; बहते ही रहो;
शुचि सौर-सुवास बहाते रहो ।।
सहो जी ! सहो; सहते ही रहो;
उर-राग का जोग जगाते रहो ।
'पुरौध्रा—प्रभा' हो सहाय सदा;
कविवीर ! सुगीत सुनाते रहो ।।

... ...

,श्रीराम रसायन पाते रहो ,
शुचि सोम-सुधा सरसातेरहो ।
प्रिय ! हीरक पर्व मनाते रहो ,
कविवीर ! सुगीत सुनाते रहो ।।

... ...

अप्रकाशित 'रालस्य-राम' की
अन्तिम सारणि का.........
अविकल उद्धृतांश :—

श्रीराम - रसायन

(यशोगान सरणि)

राम का वह प्रियवर 'रामू'
धर्म-प्रवर-सा शुचि संजीव.
आस्तिकों का प्रियवर संगी,
योगियों का सश्रद्ध राजीव.
वह स्वर्ण विहग उड़चला,
त्वरित साकेत पुरी की ओर.
बजाते थे सुरगण दुंदुभी
खोजते अनुपम अकल अंजोर.

० ०

अनुहंस बना उद्गीथ प्राण
उसने प्रगल्भ गति-मति पायी.
नत देवों ने जिज्ञासा की,
किस भाँति राम-पद-रति पायी ?
अनुहंस हो गया ध्यानलीन,
गद्गद् श्रीवाक् हुआ मुखरित.
तन्मय ऋषि-से निर्मल उर की,
ज्योतिर्मय वाणी थी गुंजित :—

————

........."राम साकेत - धाम - वासी
राम दशरथ-नन्दन सज्ञान.
राम के कला रहस्यों में
निरंतर लक्षित सब गुणज्ञान.

.........राम ही हैं रघुवंश - तिलक
राम से ही शोभित जग-धाम.
जनकजा से वढ़कर सीता
राम से वढ़कर केवल राम.

.... राम निष्पक्ष मनीषा-वास
राम जनजीवन-सौख्य अनन्त.
राम ही हैं सबके हृदयेश
राम ही पूर्ण पराक्-परांच.
.........राम 'ऊँ'-कार, राम 'लृ-कार
राम हैं निखिल इयत्ता—सार.
राम स्वाकारी, सर्वाकार
राम वहुवर्णी भूषण-भार.

.........राम हैं पूरे प्रभास्वरूप :—
"अह प्रव्रब्रामि; अहं व्रह्मास्मि".
राम सम्पूर्ण समुच्चय शक्ति
राम हैं एक; द्वितीयो नास्ति.

• राम सीतापति चरम अमेय, राम का अर्थ शान्ति विश्राम.
प्रेम में रमते राम अखंड; अविद्याहारी केवल राम •

———

.........राम "रं"–कार, अकार-मकार
राम रवि-शशि-पावक साकार.
देवविग्रह सब उनके अंश
राम हैं सबके सिरजनहार.
.........राम हैं कम्बुग्रीव अति धीर
राम हैं परम-ज्ञान गंभीर
राम हैं वाग्मी-वशी प्रवीर
जितेन्द्रिय नियतात्मा रघुवीर.

.........राम गति-अगति, और सृति-मृति,
राम की गहन एषणा गूढ़.
राम ही हैं जग, जगदाधार
राम की क्रीड़ा रूढ़—अरूढ़.

.........राम हैं मरु के श्यामल-मेघ
राम हैं दिग्दिगन्त वपुमान.
नित्य शाश्वत, परिणामी प्रवर
राम करुणा के ऊर्जित ओघ
.........दिगम्बर अम्बर दोनों राम
अजीवन जीवनदायक राम.
राम हैं पराप्रकृति उत्तरा.
निरंजन-अंजन दोनो राम.

o o o

• राम हैं शुचि सारस्वत शक्ति, धर्म के कल्पद्रुम हैं राम •
अनागत-आगत-गत हैं राम, काल-धनु धारण करते राम•

.........राम ही वेदों के संगीत
राम हैं उर-उर के मधु-गीत.
राम सौहार्द्र-समन्वित रीति
व्याप्त अग-जग में उनकी प्रीति.

.........राम त्रयकाल - अबाधित-शक्ति
राम शतज्योति अखंडित दीप.
राम हृद्देश विराजित ज्योति
राम ही भुक्ति, राम ही मुक्ति ०

.........राम ही ऋण — धन के समवाय
राम सच्चिदानंदघनकाय.
राम ही निखिल शक्ति - समुदाय
राम ऋजु-कुटिल उपाय-अपाय.

.........राम हैं सहज अशब्द अरूप
राम हैं अमल, अनन्त, अनूप.
राम की लीला-क्रीड़ा सृष्टि
सदा मंगल की करते वृष्टि.

.........राम ही आदि मंगलाचरण
राम ही दैवी - वैभव - वरण.
विपश्चित् मेधावी हैं राम
कामदाता अशेष निष्काम.

० ० ०

० राम ही हैं श्रुतियों के सेतु, राम ही जयी-धर्म के केतु !
सिद्धियाँ अष्ट राम की दास; नवों निधियाँ उनकी उच्छ्वास.

………राम हैं प्रणव - बिन्दु औ' नाद
राम सौन्दर्य चरम अभिराम.
अ–रागी, रागी दोनों राम,
विमलता - आवासी हैं राम.

………राम हैं कल्प, राम संकल्प
राम ही सम्प्रति जल्प - प्रकल्प.
राम प्रति मन के निखिल विकल्प
राम ही प्रति शिल्पी - के - शिल्प.

………राम हैं स्वर्ग, राम अपवर्ग
राम शुचितामय चारों वर्ग.
राम हैं पद्मनाभ सुख्यात
राम ही हैं सब सर्ग-विसर्ग.

………राम अश्रान्ति, राम विश्रान्ति
राम भ्रमहारी निश्चल शान्ति.
राम शतसूर्य-विनिंदक कान्ति
राम गौरवमय दैवी-क्रान्ति.

………राम अमलात्म, राम सत्यात्म.
राम रहते प्रतिपल भावात्म.
राम गत्यात्म, राम प्रज्ञात्म
राम ही आध्यात्मिक तादात्म्य.

० ० ०

० हर कृष्ण तपस्वी होकर, है गीता-ज्ञान सुनाता.
हर राम यशस्वी होकर, चारित्र्य-योग सिखलाता.

.........राम का शील लोक का निकष.
राम की शक्ति पुण्यमय सुरस.
राम की कीर्ति रही है विलस
राम से ही पूरित दिशि दश.

.........राम हैं निस्त्रैगुण्य अनन्त
गा रहे उनके गुण सब सन्त.
अचल आस्थामय वे गुणधाम
निखिल जग करता उन्हें प्रणाम.

.........राम हरते हैं आधि-व्याधि
राम में ही है सकल समाधि.
राम हैं जीवन जन्म - मरण
राम हैं धर्मप्राण की शरण.

.........राम निरुपाधि ब्रह्म गतनाम,
राम सोपाधिक ईश प्रकाम.
राम ही हैं पूषामय सोम
राम ही ग्रहतारकमय व्योम.

.........राम सर्वतोमुखी शतबाहु
राम ही 'इदम्' और 'त्वम्' भाव.
राम शत-शत वर्णों के धनी
राम हैं उच्छल जगत् - प्रवाह.

० ० ०

० जो जगतीतल का कल्याण करे, बनता है वह आनन्दधाम ०
स्वार्थी जग से जो परे रहा, वंदित युग-युग से वही राम ।"

श्रीराम - रसायन

[निर्णिति—सरणि]

तृतीय प्रवाह

………राम के करुणा-कोप अमोघ
न करते वे दो शर संधान.
एक ही उनका वचन प्रमाण
लोक-सुख के अभियन्ता राम.

………राम का जीवन पूर्ण प्रकाम
राम सच्चिदानन्द के धाम.
गिलहरी तक से करते स्नेह
शत्रु के प्रति नयनागर राम.

… ……राम हैं अहंविवर्जित नित्य
सतत जयशील राम का सत्य.
राम हर लेते दुरित अशेष
सुगति पाते निषाद औ' व्रात्य.

………राम रह रण मे विरथ विशेष
लड़े नित कैतव-रहित अक्लेश.
राम थे चरम अचक्षुस्वरूप
चरित है उनका मंगल - मून्न.

……… राम हैं पुरुषोत्तम अनवद्य
राम हैं स्तुत्य प्रशंस्य सुवंद्य.
मत्स्य, वामन, वराह बन बुद्ध
राम धरते शतरूप अनिंद्य.

० ० ०

० राम करते हैं नहीं विराम, भक्त उर के चंदन हैं राम.
आदि में राम, मध्य में राम, अन्त में राम, सर्वमय राम.

.........तुम्हीं क्षर-अक्षर उभयातीत
तुम्ही हो प्रति उर के मधुगीत.
कीर्ति—कौमुदी—कलित अभिराम
कला—सुस्मित - अंबुद तुम राम.

.........दुरित चय के तुम हो दवदाह
प्रथमजा के सिरजक समुदार ०
जानकी प्रेरित कृपा – प्रवाह
दलित करता सब आह—कराह ०

......काव्य के प्रेरक परम अनन्य.
आर्ष कवियों से वन्दित धन्य.
तुम्ही हो राशि – राशि रस – रूप
तुम्ही चरणामृत काव्य अनूप.

......गत जरा - जन्म रघुपति अशेष
सविशेष और तुम निर्विशेष ०
तेरी ही स्फारित स्फुरित ज्योति
दीनों — दलितों का चरम त्वेष.

......विश्वदेव तुम विजर - विशोक
ओकहीन हो तुम ओक अनेक ०
तुम अक्षर – अच्युत अजधाम
तुम से ही चालित सब — लोक ०

० ० ०

राम अवधेश; रामविश्वेश; राम अन्तर्मन के राकेश.
भक्ति भावोदधि की हिल्लोल, तुम्ही उसके कलरव उल्लास.

राम नित नित नव लीलाधार
भक्तवांछा-कल्पद्रुम राम.
वेर शबरी के जूठे चखे
अनूठे हैं उनके सब काम.

.........राम दो बार नहीं कहते
राम हैं स्वाँग नहीं भरते.
राम का अक्षय है तूणीर
राम अरि के घर जा लड़ते.

.........रुद्र से डरकर पापी रुदित
राम रहते हैं सतत मुदित.
समय पड़ने पर बन जाते
दुरित तमहर-रवि राम उदित.

.........राम का द्रवीभूत अन्तर
पिता, पक्षी थे एक प्रमाण.
गृध्रपति, नरपति दशरथ की
क्रिया की सादर सहज समान.

.........पर्वतों पर उनका विश्वास
पर्वतों से पायी नित कीर्ति.
राम बन-बन के अतिथि महान
बने गिरि आतिथेय सप्रीति.

राम हैं षट्वैभव श्रीगान; राम हैं शुभदायक यशवान.
विग्रह - विभूति, मानवी भगवत्ता के सर्जक हैं राम.
राम हैं प्रणव रूप साकार, राम सब देवों के आधार.
राम न भवा ही सुरभि-प्रसार, राम अच्युत अविचल अविकार.

० ० ०

० राम ऊँकार एक ही तत्व, राम त्रैमूर्तिक वैदिक सत्य,
राम औ' ओम हुये जब एक, "अहं ब्रह्मास्मि !" सत्य यह स्वत्व.

श्रीराम – रसायन

[स्तवन सरणि]

पंचम प्रवाह

......'ॐ', हैं तत्व अनादि अनंत
'ओउम' भी है उसका प्रतिनाम ०
ॐ शुभकर अम्बर-सा वितत
ॐ है निर्विशेष सन्नाम ०
......ॐ सर्वज्ञ. ॐ अव्यक्त
ॐ ही सोम-सुधा-सा जंत्र ०
ॐ है......'अ'......'उ'...'म' समवाय
ॐ – मय शुभ गायत्रीमंत्र ०
......ॐ – मय जन्म; ॐ – मय मरण
ॐ -- मय एक–दशाक्षर ज्ञान ०
ॐ है निर्गुणवाचक राम
ॐ सीता की सृष्टि ललाम ०
......ॐ आत्मापट का निक्षेप
ॐ अग -- जग की ऋद्धि समृद्धि ०
ॐ है योगेश्वर का गीत
ॐ ही ज्ञानी जन की सिद्धि ०
......ॐ सविता का आंतर - रूप
ॐ आत्मा का सहज स्वरूप ०
ॐ विभु -- विक्रम सिद्ध - प्रसिद्ध
ॐ सत् -- चित् की ज्योति समिद्ध ०

० ० ०

ॐ हरियाली हर युग की, ॐ मङ्गलमय आर्ष प्रगीत,
ॐ सर्वोत्तम उपदेष्टा ; ॐ - मय है गायत्री गीत ०

………राम सुनते रहते सबकी

किन्तु करते अपने मन की.

अनृत की कर देते अनसुनी

क्रिया ऋत सत्यमयी उनकी.

………राम को नहीं राज्य का लोभ

अनैतिक सत्ता उनको त्याज्य,

रहें किष्किंधा, लंका में

लक्ष्य उनका श्रुतिसम्मत राज्य.

………जीतकर लंका, पुष्पक यान

व्योम-विहरित करता जयगान

"सत्य में, ऋत में रमते राम

परम आदर्श-विधायक राम"

………रामकुल उदधि-प्रवर्त्तन-कार

रामकुल गंगावतरणकार.

रामकुल के ध्वज में अवदात

सुशोभित कोविदार-आकार.

………राम यदि निर्मल निर्णिति से

न करते वन निवास स्वीकार.

न होता इस धरती पर कभी

प्रवर्तित रामराज्य सुखसार.

० ० ०

० ज्ञानी अज्ञानी बन जाता, जब सुख-दुख दोनों हों समान.
दुनिया बैठी है चकित-थकित. प्रभु-की माया है महीयान

राम ॐ-कार एक ही तत्व,
राम त्रैमूर्तिक वैदिक सत्य ।
राम औ' ओम हुये जब एक,
"अहं ब्रह्मास्मि" सत्य यह स्वत्व ।।

श्रीराम - रसायन

ॐ — सरणि

चतुर्थ प्रवाह

………तू प्रजाराट्, तू सत्रराट् !
तू है स्वराट्; तू सर्वराट्.
पाताल-पाद; तू — विश्वराट्
तू धर्मपाद; विग्रह विराट्.

………तू महाबाहु – गत पाप-ताप
तू ही अग जग का सृजक-धातृ.
तू व्योम—अनल, क्षिति. अनिल आप
तू है अनादि; तू है अमाप.

………तू युगबोधक; तू सर्वव्याप्त
माया के घन-तम का प्रभात.
तू आखेटक अभिनव विराट्
तू पद्मनाभ; तू प्रवरराट्.

………तू सर्वगन्ध, तू सर्व - कर्म
तू आकाशात्मा सत्यकाम.
तू स्वजन सखा, तू तात मात
निर्दोष क्रिया; गतिमय विराम.

………अतिशय उदात्त; तू अहोरात्र
सौरभ सुषमामय विश्वप्राण.
श्रीवत्सकान्त ! तू गुणातीत
तू लीलाधारी सहज आर्द्र.

० ० ०

अनवद्यवंद्य अतिशय अम्लान; सौरभ सुषमामय विश्वप्राण.
शाश्वत शुचिता तू सार्वभौम; प्रामाण्य परम तू ही प्रमाण.

.........ॐ ब्राह्मी - स्थिति का संकेत
ॐ है ज्ञानक्रिया समवेत ०
ॐ अघ - ओघों का कठफोड़
ॐ आत्मा का चरम निकेत ०

.........ॐ है सुर - सुकान्ति सरनाम
ॐ ही है दर्शक सद्धाम ०
ॐ है चित्रा-सा अभिराम
ॐ है ललित-कलित सुविधान ०

.........ॐ है अनहद-सा ध्वनि-धाम
ॐ है रहता सदा अनाम ०
ॐ शुचि सुजस सजीली शान
ॐ अनिरुद्ध, अयोध्य; अकाम ०

.........ॐ सारूप्य-मुक्ति का दान
ॐ हरिपद का चिन्मय द्वार.
ॐ त्रयदेव, ॐ त्रैलोक्य
ॐ है पावन स्निग्ध महान ०

.........नित्य निपुणी, निष्णात निपुण
ॐ एकल निर्लिङ्ग कुलिङ्ग ०
ॐ हरिहर के उर का द्वार
ॐ रघुवर की ज्वलित तरंग ०

० ० ०

ॐ से मिट जाता 'स्याद्वाद', ॐ से होता गलित प्रमाद ०
ॐ सत्यांशी स्वयं – प्रकाश; ॐ – सर्जित कैवल्य सुवाद ०

• 'शेष' के फण की सुमणि महान

ॐ गणपति का 'शुंड - विधान.'
राम का सशर शार्ङ्ग है ॐ
ॐ है, त्रियादोर्ध्व पर - व्योम.

• ॐ सच्चा न्यायिक सर्वेश.
ॐ अति अभिनव प्रणव सुवेश.
ॐ इंगित करता निःशेष :—
"मनुर्भव ! प्राणी बन अक्लेश"

• लोकनायक आयुक्त विसंग
ॐ से उपजी ओप अरंग.
ॐ ब्रह्मास्त्र -- सृजिन शून्याङ्क
ॐ सुखसंचारक पूर्णाङ्क.

• राम की दिव्याभा है ॐ.
'दहर' उद्भासित करता ॐ •
गुणगणों का अर्णव है ॐ
प्रभान्वित उससे ही रवि – सोम.

• ॐ है रहता सदा 'अ — वृद्ध'
ॐ से क्षरित 'बिरोचन – बुद्धि'.
ॐ — विलसित है 'सत्यप्रकाश'
ॐ से ऊर्जित 'चन्द्रप्रकाश' .

• • •

नृत्यरत केकी की है ॐ अलसमन चिर चिन्मय चितवन •
सुयशशाली ऋषि-मुनियों हित; ॐ है मोक्षकरी सुर-ध्वनि •

………ॐ अति मृदुल मनीषा गीत
ॐ योगी की प्रीति - प्रतीति.
ॐ से ऊर्जित विनयाचार
ॐ सुरपुर की मंगल रीति

……… ॐ है ध्रुव - अंचल का कीर
ॐ पापी की अन्तर - पीर.
ॐ सुरतरु की - गिरा गँभीर
ॐ शिव का त्रिशूल हर - पीर.

……… लोक संरक्षक; स्वस्ति - समुद्र
ॐ ही परा - ज्योति है भद्र.
ॐ ही है सब दृश्याधार
वही है दृश्यातीत अपार.

………ॐ ही रौक्म सृष्टि का शुंड
ॐ है मूर्तिमान वैकुण्ठ.
ॐ जीवनदा नार – अयन
रुद्र की लोचन वह्नि प्रचंड.

………स्थविर – सा ॐ सतत सम्पूज्य
ॐ सब मन्त्रों में संयोज्य.
जितेन्द्रिय ॐ; अतीन्द्रिय ॐ
ॐ रवि–रश्मि. ॐ उडु – सोम.

० ० ०

० ॐ-सर्जित निष्काम विराग; ॐ –सज्जित हेमंत बसंत.
ॐ है 'शिखा'; ॐ है 'शिखर'; ॐ ही रसमय स्रोत अनत.

———

……ॐ ही राम रसायन भक्ति
ॐ की सर्वात्मक अनुरक्ति.
स्वयं-प्रश्नी; एकोत्तर शक्ति
ॐ-ऋषि-पथ-पर चरम प्रपत्ति.

……यही है चेतन - चेतक तत्व
मही का यही! चरमतम सत्व.
यही है मंडल – सौर प्रचंड
ॐ नारायणधृत कोदंड.

……ॐ सारस्वत स्वस्ति – तिलक
ॐ ही है ऋत का कल्पक.
ॐ से पाप हुये सब भङ्ग
ॐ दैवी-सृति अमित असङ्ग.

……ॐ कुण्डलिनी की फूत्कार
यही मुनि जन का सिद्धि–प्रसार.
ॐ दलितों – हित ज्योतिर्द्वार
मृदा का यही मुदित उच्चार.

…… ॐ – मय है मन का शुचि त्राण
ॐ – मंडित–सुधि महाप्रयाण.
ॐ जग- जन हित स्वस्ति सरणि
ॐ सुरभित सचराचर त्राण.

० ० ०

……विश्वबन्धुता मानवता का, करता सृजन ओउम् श्रुतिसार.
हर लेता अघ - ओघ सकल वह, करता निज लीला विस्तार.

......ॐ दहता सब भौतिक क्लेश
ॐ में सुख का है मुनिवेश.
ॐ हरता पीड़ा का भार
चा सदा सक्ष्य अवतार.

..... सनातन स्वस्ति - सर्ग है ॐ.
चिरंतन - ध्येय भर्ग है ॐ.
ॐ पथदर्शक ध्रुव सा नित्य
ॐ चिंतामणि सहस अचिंत्य

...... ॐ शाश्वत मंगलमय मूर्ति
ॐ ही है चेतन की स्फूर्ति.
ॐ सर्वोच्च कला का कूट
ॐ है अनुपम अमृतमय घूँट.

......ॐ ऊषा - सा पुण्य प्रभात.
ॐ अम्बर का पीत प्रभात.
सजग जड़-चेतन में है ॐ
यही करता जग को चिति-स्नात.

......ॐ में विश्वक्रिया का वास
ॐ - मय है "विमृत्यु - अवकाश".
ॐ चिन्मयता की रस - राशि
ॐ नभ - निवसित 'राम - उजास.'

o o o

ॐ नैसर्गिक कुमुद कला, ॐ है ऊर्ध्वगमित सुर - घोष.
सुरतिमय—सारे तपवल का, ॐ है अविचल अगम अदोष.

......ॐ जग का विकास आलोक
ॐ रहता आश्वस्त अशोक.
ॐ अमितामय अमिय अलोक
ॐ-मय सकल सुरोक-नरोक.

......ॐ चिद्दर्शी घटा अबंक
ॐ है आदि अभय तत्त्वांक.
ॐ एकांकी 'अलल - विहंग'[1]
ॐ अच्युत त्रसरेणु असङ्ग.

......ॐ है जन्मरहित राजन्य
ॐ रटता; "श्रीराम सुधन्य."
वही हरिहर का धनुष प्रणम्य
ॐ की गति है चरम अगम्य.

......ॐ सौवर्ण 'राम का मार्ग'
ॐ है हर देवी का सुहाग.
राम में होकर ध्यानाविष्ट
ॐ वितरित करता सब इष्ट.

......ॐ की मंगलमय सुप्रीति
ॐ कल्याणी का मनिदीप.
ॐ सुखवाही सुर – संदीप
ॐ मनिमय लिपि परम अरूप.

० ० ०

......ॐ है चन्द्र - सूर्य से सेव्य, ॐ है परमशून्य शुभ्राङ्क.
भक्ति के रस का यह नवनीत ॐ ही मुक्ति-तत्त्व शुद्धाङ्क.

१—वह आध्यात्मिक पंछी है जो व्योम में ही जन्मता है और व्योम में ही मरता है तथा सदा-सर्वदा सप्त व्योम में ही विचरता रहता है ।

श्रीराम - रसायन

[समन्वय सरणि]

......चिन्मयी ऊर्जा - ऊष्मा के
राम हैं प्रेरक - परिचालक.
राम की निर्गुण ज्योति अमेय
ॐ है उसका परिचायक.

......ॐ इन्द्रियातीत पर - ज्योति
रामविग्रह का ॐ प्रकाश.
राम सच्चिदानंदघन सूर्य
ॐ है उनका महदाकाश.

......राम संसृति के स्रोत अनन्य
ॐ है उनका कला विलास.
राम गुणगण के सिंधु अनंत
ॐ उनका निर्गुण उच्छ्वास.

......राम हैं सबके साध्य-उपास्य
उपासन - साधनचय है ॐ.
राम हैं सगुण निर्गुणातीत
ॐ रघुबर का रोहित - लास्य.

......लोक रक्षण, सज्जनता शौर्य
राम हैं शुचिता के सद्धाम.
ॐ है उनकी कीर्ति अनन्य
ॐ है रामकला का नाम.

o o o

o ॐ सीता का 'शोभा—दीप,' राम का तेज—पुंज है ॐ.
राम के मन का मानिक ॐ, रामदर्शन का दर्पण ॐ.

……राम - सीता जगपालक स्रोत
ॐ है उनकी अणिमा ज्योति.
ॐ 'दशमुख' हित हनुमज्ज्वाल
दुशासन' के हित गदा कराल.

……राम द्वयता के मेटनहार
ॐ सीताश्रित चेतन - धार.
लोल लीलामय ललित ललाम
ॐ रघुपति-रथ - केतु. प्रसार.

……सदा सहजा सीता के सङ्ग
राम रमते अविरल निःसङ्ग.
ॐ है उनकी इच्छा तरल
व्योम निर्गुण का ॐ - विहंग.

……राम - छवि की द्युतिमय मुसकान
ॐ में विलसित है छविमान.
जलधि - लंघन उद्यत हनुमान्
ॐ उनका लाङ्गूल ललाम.

……ॐ ग्रह तारों का संगीत
ॐ है अनावतरित सुशक्ति.
ॐ है सतत अरूप - अनाम
'राम - रस' - पूरित प्रति हृद्धाम.

० ० ०

……राम के रस का वर्षण ॐ; विशदतम-लघुतम दोनों ॐ.
सत्य का सेतु - केतु है ॐ - ॐ है अग - जग का रवि - सोम.

……ॐ है रामकृपा का सार
ॐ सुर मुकुरकल्प मनुहार.
ॐ - मय सौदामिनी सु-धार
रामदासों हित मृदु उपहार.

……कलुष - कल्मष के मर्दनहार
राम हरते धरणी का भार.
राम के रस में करता लीन
ॐ है रामकृपा का द्वार.

……अंधतम में जब घिरता लोक
राम तब लेते हैं अवतार.
समल को कर देता है अमल
ॐ है उनका ही उच्चार.

……राम विधि - हरिहर के सर्जक
ॐ है उनकी शक्ति पराक्.
रामरस - मंथन है ॐ - कार
उसी से रसमय है संसार.

० ० ०

……ॐ को मत खोजो साथी ! ; ॐ है अनावतरित सुशक्ति.
राम-रस में करती जो लीन; ॐ है परा-प्रदत्त प्रवृत्ति.

० ० ०

……राम का ॐ ; ॐ के राम; अतुल दोनों का है माहात्म्य.
ॐ रहता प्रति-पल गत्यात्म, "ॐ है ब्रह्म" यही सत्यात्म.

० ० ०

° ° °

पूर्व-मुख बैठ करे उपवास
कुशासन पर आसीन त्रिरात्रि.
ओम का जाप जो करे लक्ष
स्वात्मदर्शी बनता प्रत्यक्ष.

° ° °

सुप्रेम समन्वित था रामायत मानस,
"ॐ" की गति वह था
कुछ - कुछ लख पाया।

निःसंग विमल गोलोक-धाम शुचि प्रभु का
था गोल वृत्त-सा
मधुवर्षी मँडराया ।।

लौकिक सब स्मृतियाँ थीं हो चलीं तिरोहित
आकाशवलय - सा
छाया अति मनभाया।

हर्षित, ह्लादित, हुलसित - मन निर्मल होकर,
शाश्वत प्रभु - भक्ति - प्रदीप
दीप्त कर लाया ।।

° ° °
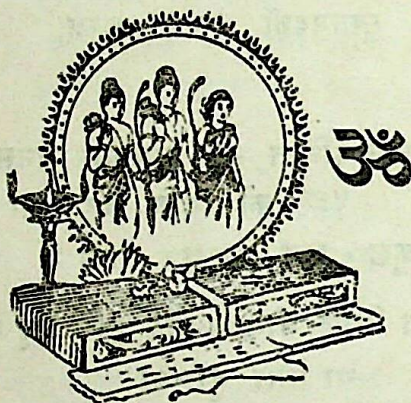
सदा सहजा सीता के सङ्ग
राम रमते अविरल निःसङ्ग ।
'ॐ' है उनकी इच्छा तरल
व्योम निर्गुण का 'ॐ' विहंग ।।

श्रीराम – रसायन

[दोहा - दुग्ध सरणि]

सप्तम प्रवाह

आरम्भिक विनय

० सुचिता – सार सँभारि ;
सूध मन
मोर सिरोहै ।

राम - रसायन - सार - ;
सुधर मन -
मीन उरोहै ॥

० टोहि - टोहि कछु पाय ;
तहूँ कछु
औरहु टोहै ।

मुदमन भयउँ निसार ;
'राम - मनि'
मो मन मोहै ॥

विनत - अरदास

सीतानाथ सुजान; बुद्धि - विभव सुचिता सदन।
बसहु सो मम उर आनि; रामचरित मंगल करन ।।
बार - बार प्रनवउँ तुम्हैं; श्री शारदा गनेस।
शुकदेव ! रच्छा करहु; कवि - मति बरु पवनेस ।।

...... संत सुजान सुधीर ;
स्वर सों लेखा कीजिये।
अरपहुँ मति अनुसार
'राम - रसायन' पीजिये ।।

० ० ०

...... राम कै वल्ली कर गहे ;
बहौं धार प्रतिकूल।
एक छोर कंटक छजे
दूजी दिशि हैं फूल ।।

...... जहँ तक इन्द्री बस नहीं;
तहँ तक काँटा मान।
इन्द्रिय जहँ निज बस भई;
काँटा फूल समान ।।

...... दर्शन — अस्तिकता जबहिं;
अस्ताचल कहँ जाँय।
समझेउ भारत देश कै
उन्नति अब है नाय ।।

० ० ०

...... आप्त-मनीषी कहि गये; धरमु न कबहुँ नसाय।
चौथाई तबहूँ रहहि, धुर कलिजुग जब छाय ।।

० ० ०

...... राम – राम मैं रटि रह्यों, वामै दृढ़ विस्वास।
टिटिहिरि–वत लेटा भया; करहुँ विनत अरदास ।।

नदी - नाव

...... रामनाम - दरिया अगम; लहरहि ललित ललाम।
आतमु - नौका तिरि रही; धीवर मन कूँ जान॥

...... सुख - दुख तौ छूटैं नहीं,
जब लौं भय न नसाय।
आलसु 'भय' कै मूरि है;
वनु 'रामू', मिटि जाय॥

...... वारि अकूतो है भरो;
नदिया अगमु अगाधु।
डोंगी डगमग डोलती;
बपुरे ! बल्ली साधु॥

...... साथी ! यहु नदिया लखहु;
तट जाके हैं दोय।
मँझधारे सों मापिये;
भाव-भगति मन पोय॥

...... स्वांसा साँची है वहै;
जहँ अनहद गुंजाय।
जैसे नद-नरवा ढुरे,
दरिया माँहि समाय॥

० ०

...... दरिया वाको कहति हैं, जो बहि जलधि समाय।
लोलि - लहरि 'लह-लह' लहै, आपुनपन बिसराय॥

——————

श्रीराम – तुला

...... जो मनु ! सौदागरु वन्यो; तौ डाँडी ना मारु ।।
पपिहारो अपजस लगहिं; याको कुफलु बिचारु ।।

...... जौ मुखिया सौदा करहु;
नहिं तौलौ दुरभाव ।
धोखा - धन्धी कै सखे
पेखहु कुटिल कुभाव ।।

...... राम निनारो बानिया;
तौलत जगु सुखु - सानि ।
डाँडी तौ कर मों गही,
उर सों सुचिता सानि ।।

...... डाँडी तौ सत कै अहै,
धरमु पसेरी जानु ।
करमु—पालरा साधि कै;
तौलहिं राम 'सुजान' ।।

...... गहु तू साँची - सी तुला;
अमर नामु ह्वै जाय ।
मानहु तुम नीको कहो;
अलस - अनन्दी भाय !

० ० ०

...... उर महं सोचि-बिचारि कै, करहु सुकर्म सुखारि ।
राम तिहारो मिलैगो; साँचो सृष्टि खरारि ।।

नवनीत : घृत : नमक

.... अनियारे ! सब सों मिलहु; जस पय सन है घीव।
रूप बहुत दरसित अहहिं; पै सबको इक पीव ॥

....
नमकु औरु नेनू सदहि,
रलहिं मनुज मंह सक्ति ।
बीर्ज मानुसी अमर घृत,
नेनू है सद्भक्ति ॥

....
है सुधन्य नवनीत वहु,
जेहि सों 'जरनि' बुताय ।
धन्नि - धन्नि 'नेनू' वहै,
त्रिजलाला जेहि खाय ॥

....
है सुधन्य जू ! घृत वहै,
जो मख जरि धुंधुवाय ।
धन्य वहै घृत - र्वात्तिका,
'नवदुरगन' जरि जाय ॥

———
राम मिलनु महँ नेहु दृढ़,
अहं - ब्रहम मनु ! छोड़ ।
जैसे माखनु आँच दइ,
'मइहर' लेत निचोड़ ॥

० ० ०

———ध्यान - अगिन कै आँच दै, 'मइहर' मल कौ फेंकु ।
मैलो 'मइहर' फेंकि कै, पीव घीव भे एकु ॥

रुधिर - वीर्य

---- लहू - वीर्ज के भाव सन, सज्यो मानुसी रूप।
यामें कर्त्ता रुधिर है; वीज सुकर्म निरूप॥

---- रुधिर शुद्ध जेंह है नहिन;
विनिसइहै वहु वीर्य।
संजम - श्रद्धा जौ नहीं;
का करिहौ मनु - वीर ?॥

---- वीर्य सदा उपजावतो;
समता दृढ़ विस्वास।
राम - रागिनी उर लसै;
पुरिहै सिगरी आस॥

--- प्रीति पुरौधा है भलो;
दृढ़ गहियो मन - डोर।
गोपिन को वहराइ हरि
भजे द्वारिका ओर॥

.... रुधिर - वीर्य कै तप्ति सों;
उरजित हर जग - जीव।
सुधिर 'सोम' कै तप्ति सों;
मिलि जइहै सुखु - सींव॥

o o o

खून कै लाली अगम अति; जग सिरसो अरुनार।
घायलु भा गतपुन्य हूँ, धिक्! खूनी हत्यार!!

साकार निराकार

……… पारसार देखन चहौ, काटहु तृस्ना-ताँति।
तांति-तंतु के कटत ही, खेद-भेद दुरियात॥

……… धोबी चतुरो चाहिये,
दुहुँ पट रेहू लेसि।
मलिन मटीले बस्त्र को,
अमल करहि सत भेस॥

……… दीप जारि दहिनी तरफ,
जल भरु वाईं ओर।
परछाईं दुइ होंयगी,
एकुइ जोति – किसोर॥

……… कारण – करण सराहिये,
'मैं' 'तू' की तजि बानि।
'मैं' 'तू' तौ मिटि जायगो,
'आकाशावकास' सनि आनि॥

……… द्वैत बिना है रूप नहिं, गुनु सगुनी मन माहिं।
द्वैत छोड़ि अद्वैत लखु, रामहि-राम लखाहिं॥

० ० ०

हैं राम निरगुनी निराकार; जनहित माँ लेयँ स्वरूप धारि।
पापिन हित साबुन सरिस बने; तिनके कलमष का करैं छार॥

.... आतमु तौ भेदहि नहीं, ब्रह्म है एक अजान।

नारि - पुरुष का भेद यहु; माया रूप लखान ॥

....
ज्यों उपमा उपमेय सों ;
भाव भए वपुमान।
त्यों स्रद्धासह लेखिये,
आतमु - ब्रह्म समान ॥

....
जब तीखा नीका लगै ;
हलको हिय हुलसान।
'भवता' मों मन यहु फँस्यो,
जानहु सत्य प्रमान ॥

....
भवता तजि निरभय बनहु,
तजि कलुषाई बानि ?
'तुरिया' मँह जब तिरि रह्यो,
'तिरिया' धूरि समान ॥

....
विनु देखे साकार के ;
निराकार ना पाहु।
दधि को 'थक्का' सामुहे;
मथहु तौ माखन खाहु ॥

....
आसा – बासा त्यागि कै,
बनु मनु ! तू आजानु।
मन - चिरिया फँसि जायगो;
तिरिहैं कैसे प्रानु ॥

० ० ०

.... चंचलता मों द्वैत है; अचल होय अद्वैत।
राम भगति–मीनार सों, मोजरा सबको लेत ॥

———

योग

.... इड़ा पिंगला सुषुमना; मूल स्वरन की तीन।
स्वर माँ वासा राम कै, जोगी तँह लवलीन .।

.... जोग कै दरिया अगम है;
जोगी लहर समान।
आंतमु नौका वहन दे;
केवट कूँ सनमानि।।

... . रोग भोग ते ऊपजें;
जोग औषधी मानु।
'चेतन रस' रुज परिहरहि
करु ऐसो परमानु।।

.... इड़ा, पिंगला; सुखमना;
हरखीं भाव समान।।
त्रय–नारिन मों राम रमि;
करें जगत — कल्यान।

.... गुदा लिंग सों खींचि कै;
नाभि — कमल मों लाव:
शेर – ससा इक ठौर करि,
सुस्थिर भाव मिलाउ।।

o • o

.... कमलनाभि की गहि सरन हेम पुष्प पै आव।
विंध्याचल के चारि खग योगी तू चहकाव।।

.... पचम द्वारे पहुँचि कै नारी तीनि सम्हारु।
'मूस — बिलारी – भाव' तजि; इनकौ इकसर पारु॥

.... ऊर्ध्वगमन बिलस्यो जबै;
अनहद रागु सुनाय।
भाव–स्वभाव विहाय सब;
सतमुख साँच लखाय॥

.... जोग तौ वहै सराहिये;
जु भोग — विहीन कराय।
तैल — तक्र – काई ढँपै
तउ जल स्वच्छ लखाय॥

.... मन – मथन कै रीति है
शान्ति की 'हँड़िया' लाव।
खैंचि 'मथानी' जोग कै;
'ऐंचन' 'सुरति' बनाव॥

.... मथति–मथति दधि आपु ही;
'नेनू' गो दरसाय।
ज्यों बिजना के झले ते;
पवन – झकोरा आय॥

.... ज्यों लहरै नभ पै पवन; वैसेहि आतम पीव।
जोग—सुरति सान्निद्धि सों, तृप्ति रलै सुखसींव॥

० ० ०

.. .. जोग – जोग तुम बकहु मत, जोग है कठिन महान।
पेटु — पीठि इकसर भये; जागहि जोग सुजान॥

० ० ०

.... जब मन सुस्थिर सम्भरै; ऋतम्भरा चित चारु।
सम्प्रज्ञात समाधि पै; योग – सुयोग विचारु॥

अध्यात्म - दर्शन

.... पाँच तत्व को कोट है; रामराज तहि माहिं।
सत्य-पुरभि 'वरदार' जो; शुभ साया सब पाँहि।।

.... पिरथी गुन – सिरजक अहै;
जामें रसधि समानु।
जल – पोषन करती अहै;
अगिन सफाई मानु।।

.... सान्ति सुजल सों लीपि कै;
सिरजो ग्यान उजास।
छिमा 'को' आसन डारि कै;
सिरसो साधु ! उदास।।

.... समता – सुचिता सँग रम्यो;
दया – विटप फल खाहु।
सत्य – सोम सुचि सरणि सों
'राम — रसायन' पाउ।।

.... 'अभय' सत्य को अंश है,
'सत' सन्तनहिं सुहाय।
साँची अमला छितिज जहँ
रामहि – राम लखाय।।

o o o

.... यहु जगती तौ पैंठ है; आपुनि-सौदा सूझि।
पोचन संग निबाहु नहि, रमो राम पै रीझि।

……… जगु 'पुतरी' को खेल है; नचै तृषा के सूत।
वाही के वशभूत ह्वै, छलना कै नचकूद ॥

……… एक 'र-कारी' राति भरि;
हँसि - हँसि कै बररायऽऽ :--
"दीपक — तेज - प्रकास लौं;
रामहि - राम लखाय।"

……… श्रुति का आगमु है रुक्यो;
गुन — बंधनु मों आहु।
या बंधन को तोरि कै;
लखैगो लोचन लाहु ॥

……… "राम" सुखारी मंत्र है;
भक्तन को आराध।
पूजि बिम्ब – के — बिम्ब को;
पुरवहु निज सत—साध ॥
……… मौनमना साधन किए,
मिल्यो कछुक विभु — सार।

माथ लसेटे रामरज,
प्रतिपल पलहुँ निसार ॥

० ० ०

……… हेमकमल कै नाल है; परिमल को प्रतिपाल।
अलवेली अनुभूति सों; विनसहिं भ्रम-भूचाल ॥

.... कीन्हें कौल भूल्यो सबै, छूट न मोहु ललाम ।
गर्भ-पींजरनि मन फँस्यो, बिसर्यो राम क नाम ।

.... 'अ' में आवाहन गुनौ;
'ऊ' सों भेद बिहाय ।
'म' सों मरैं मकार सबु,
'वेदस्' सकल सुहाय ।।

.... 'ल' कौ पृथ्वी समझिये;
'ह' कौ अम्बर जानु ।
'य' 'ह' मों हैं प्रतिवसित;
वायु; व्योम वपुमानु ।।

.... परमहंस तौ उड़ि चला;
वनिगो व्योम — विमान ।
प्रान, संपेलुनी फुसकी फुफुकि ।।
गुन्नै ... सुन्न सुनान

.... जातक तौ सत सन रम्यो ,★
मकई — भुट्टा हाथ ।
बीज — पाँतियाँ सम सबै ।
विनसी बिषमा भाँति ।।

० ० ०

.... भौंरन ने 'गुन - गुन' करी; ऊदे कुसुम मँझारि ।
उजरी — उजरी सों विभा, सुधि—बुधि दई बिसारि ।।

★—यह अनुभूत ध्रुव सत्य है कि मकई के भुट्टों में दानों की खड़ी पक्तियों की संख्या सदैव दो से विभाजित होने वाली होंगी ।
अर्थात् उनकी संख्या २, ४, ६, १०, १२ आदि होंगी ।
३, ५, ७, ९, ११, १३ आदि नहीं होंगी ।

.... सुत–दारा परिवारु को, छनिक मुसाफिर ! जानु ।
केंची लौं 'केंचा' चला, सोई काल कहान ।।

.... नारि वीचि -- छाया छुपी;
पुरुष है मेघ समान ।
दीनन का धारकु वहै;
मंगलमय भगवान ।।

.... ऋतदरसी गुन अगिन कूँ;
पवन झकोरा देय ।
'नभ–छुट्टी' है पास, क्यों
व्यर्थ तसल्ली देय ?

.... काम – धनुष टंकारता;
कुटिल बाँकुरी खोंट ।
जउ या सों बचिबो चहौ;
पिउ 'राम-रसायन' घोटि ।।

.... बीर – धीर जलजात है;
अटल – अडिग विस्वास ।
एकहि नाल सों लहि गयो,
नहिन औरु की आस ।।

o o o

काल – सुकाल – प्रकाल शुभ; 'विमरन' सरग सुहान ।
महाकाल के महल मँह, 'मधुमति – मिलन' महान ।।

रोहित पै मोहित भयो; लोहित लखियो लाल।
सप्तरंग इकरस भये; लखौ स्वेतिमा ज्वाल ।।

.... रोहित हुते सो छार भे;
'लप — लप' लहकें लाल।
यहु कल्की—कलिकाल को;
लिलिहै स्वेतिम ज्वाल।

.... लाल लाल चहुं दिसि दिखै;
अरुनाई धुधुवाय।
चरम सुफेदी दीखिहै
'राम - रसायन' पाय ।।

.... स्वेत - लाल हू कछु नहीं,
ऊपर हू कछु और।
परा - बैंगनी रङ्ग में
सखे ! रमो रसवोर ।।

.... 'चक-मक' मोह मिटाइये;
धरि धीरजु घनकाय।
कारे — सारे मरि मिटे,
सुर उजरौटी पाय ।।

o o o

.... बिजुरी सबके मन बसी; परमेसुर रखवार।
ठिठुरि--ठिठुरि सीतल लसहु; बूझहु हिम-उद्गार ।।

.... भेदु - भीति परिहरि सवै; सकल दृष्टि सन देखु ।
घटमन ज्यों पनिहार कौ, सोई सुमति सरेखु ।।

.... आतमु गुन; अरु व्योम गुन;
दूनौ एकु मिलाव ।
फिरि विषयेन्द्रिय साधि कै;
राम — मयी गुन गाव ।।

.... भाव तौ भावहिं मों रमै,
सुचिता सन् फुलियाय ।
ज्यों दरपन समुहे किए;
पूरन बिम्ब लखाय ।।

.... राम कै महिमा करम माँ,
जाके जाय समाय ।
वेद - विभव विहरे बिना;
'बड़भागी' बनि जाय ।।

.... मन -- बुद्धी इकठौरि करि;
गुनिये शुभ सद् — काम ।
जनम -- मरन लागै रहिय,
रटहु 'राम – सिय' नाम ।।

० ० ०

.... बलिदानहिं लखु 'साम' मों; कर्म यजुर मों जान ।
ऋग मों रिजुता पाइयो; मोको यही लखान ।।

अन्तिम आत्मानुभास

० राम नाम रमणीक अति, राम - रमा सनमानु।
प्राणी! तजि पपिहर भ्रमर, (करु) 'राम-रसायन' पानु।।
० लाल रंग रमणीक है, सूछम वहिते स्वेत।
'राम रसायन' जो पियो, दिखि जइहै साकेत।।
० कूकुर है फल खात नहिं, शहद न संचै भौंर।
चारवाक! भरमो नहीं, राम बसै सब ठौर।

० ० ०

० बरस चारि सैंतिस दिवस; रहे आयु के शेष।
और कछू माँगौं नहीं, मागहुँ कृपा अशेष।।
० सात बरस गुरु ने दियो, पै मैं जोरेउँ हाथ।
परमेसुर एकल अकल; रघुवर रुचिर सुनाथ।।
० धनतेरस कूं दिवस है, अहै दियारी' कालि।
दुइ हजार अरतिस बरस, भई लेखनी लालि।।

० ० ०

० रामकीर्ति लिखनो चहौ; तौ मसि सिन्धु घोराव।
पारिजात के कलम गहि; कागद गगन बनाव।।
० राम कै महिमा अगम है; बरनि न पावै कोय।
अनजाने जौहू लिखै, है बड़भागी सोय।।
० सारदि लिखवायो सबै, सुचिता मन मों लाय।
रच्यो गजानन ध्यान कै; (परि) पवन पूत के पाँय।।

श्रीराम - रसायन

[स्वर्स्तिसिंधु श्री सीता सरणि]

आतमु टोहि कै 'ओपु' लखौ
अब औरहु काहु न ध्याव, अनारी !
राम कै 'रामा' दसौं दिसि दीपति;
राममयी दुनिया भइ सारी ।।

:०:

सीखी सुमति अनोखी

सुख सोहित सत्यार्थं सुरभि में,

शुभ सुरति

सुराग सरेखा।

दीखी देवोपम दिव्य व्योम में,

रघुबीर सरणि

सी रेखा॥

मृदु मुकुलित मनहर से घन में,

दीखी छबि

दीप्ति अनोखी।

सीय समाहित सौदामिनि से,

सीखी शुचि

सुमति अनोखी॥

अष्टम प्रवाह

श्री सीय-स्तवन

परछाइँ बनी जग की सुषमा,
सुखरासि सजी शत मंगलसानी।
लोचन—लाहु—मयी ललिता,
कलितातित 'लुनाई-लता' सरसानी।
लखि ग्यान-गुमान सिराने सबै,
रस की सरिता 'अमिता' उमगानी।
शुचि राग—सुभाग—सुहाग सनी,
सविता-सी समाई है सीता सयानी॥

दसकंध को ग्यान की भीख दयी,
महाशक्ति परा अवधेश की रानी।
सबै सोहत सत्व 'स—कार' सों हैं,
शुभकारिणी हैं सदा सीता सयानी।
मिथिलेसलली नित मंगलदा,
वे अयोनिजा हैं नवसृष्टि प्रदानी।
'रघुराज—प्रिया'; वह 'रामक्रिया',
है सिया सगुनी सिरमौर सुहानी॥

सांवर विष्णु औ सांवर कृष्ण हैं,
पै गोरी है श्री मिथिलेसलली ।
सांवरे राम कै सन्निधि मैं,
रही गोर सुवर्ण-सी सीताललो ॥

राम हैं लोकन के 'रंगरेज',
पै विलोचन मैं सिय-रश्मि रली ।
सुमिरे जिनके कलिकाल भजै,
सोइ सीय है मंगलमूरि भली ॥

⊛ ⊛ ⊛

राम को नाम रटौ जु ! रटौ,
दुति सीय सती कै सदा अनियारी ।
रामकिपा ते मोह मिट्यो,
तबहीं दरसै छवि वा अरुनारी ॥

आतमु टोहि कै ओप लखौ,
अब औरुहु काहु न ध्याव अनारी ।
राम कै 'रामा' दसौं दिसि दीपति,
राममयी दुनिया भई सारी ॥

सितता अरुनाई को मोह मिटो,
सुचि सीयमयी है भई गति न्यारी ।
भई जागृत अन्तरजोति जबै,
बिलसी मृदुला मिथिलेस दुलारी ।।
कछु औरु न मोंहि लखाय परै,
मुलकै सरकार सियाकरधारी ।
जगमातु अहो, महरानी महा,
बिनवौं तुम्हैं राम की प्रानपियारी ।।

★ ★ ★

सृष्टि कै सर्जक सीता अहै,
वे' सती सदा प्रेम-परायन है ।
कुन्दन—सा उनका है सतीत्व,
शुचि चारु चरित्त 'सुषायन' है ।।
राधा है 'कान्ह' कै साँची सखी,
सिय को पति-प्रेम लुभायन है ।
दृढ़ प्रीति कै सीय है धीर धुरी,
सिय-त्याग सों दीप्त 'रमायन' है ।।

श्रीराम-रसायन

[समापन सरणि]

"परा–पीर का पंक्षी पुकारता है;
प्रभु राम की रागिनी गा रहा हूँ।
अरे! ओ!! जगमीत!!! न रोको मुझे;
रघुराय––की––राह पै जा रहा हूँ।।"

मुझे पीर-परा अब टेरती है !

यह जीवन—भार सधे—न—सधे,
रघुराय की कीर्ति सुना रहा हूं।
शुचि काव्य—तपोवन में रुचि से,
प्रभु—भाव प्रसून खिला रहा हूं।।

विभु की सुधि में सभी विस्मृत है;
सित—शोभी सिया में समा रहा हूं।
गुरु के पदपंकज ध्यान लिये,
मन 'राम—रमा' में रमा रहा हूं।।

प्रभुपन्थ में रेंग पिपीलिका—सा,
जग सेतु के पार मैं जा रहा हूं।
कलिकाल—करौली से घायल मैं,
प्रभु—पाद का जोग जगा रहा हूं।।

नचिकेता—सा मृत्यु के द्वार पै मैं,
'अमिता' से मिताई मिला रहा हूं।
जगमीत ! न टेढ़ी निगाह करो,
'नभ—नेम' ही तो मैं निभा रहा हूं।।

★

'काव्यप्रसू' ने दिया अनुदान,
सदा 'चरणोद' पिया करता हूं।
'बीर—प्रसू' ने, दिया बर जो,
अभयामृत हो बिहरा करता हूं।।

नम्य निशा के निकुंजों में,
नित' मृत्यु' से केलि किया करता हूं।
मुझे पीर—परा अब टेरती है,
पय व्योम—नदी का पिया करता हूं।।

नहीं रोने की याद रही मुझको,
रंगरेलियों से कतरा रहा हूं।
उर—ऊर्मि—उजास से तन्मय हो,
'क़ज़ा' की 'मज़ा' अभी पा रहा हूं॥

रहा लौकिक रूप से निर्धन मैं,
'निधनंजयी' हो अब जा रहा हूं।
मटियारे अरे जग ! माफ करो,
रघुराय की राह पै जा रहा हूं॥

विमला–सी विभा में बिंधा हुआ हूं,
'गुह–गेह–विमोह' को पा रहा हूं।
'परा–पीर' का पंछी पुकारता है,
प्रभु—राम की रागनी गा रहा हूं॥

अब 'लाल' औ 'स्वेत' को देख लिया,
'परा-बैंगनी' वृत्ति बना रहा हूं।
अरे ! ओ ! ! जगमीत न रोको मुझे,
'रघुराय—की–राह' पै जा रहा हूं॥

सुर--वैभव वारो न प्यारे प्रभू ! ,
बिसरे मन में बिरमा करता हूं।
जिसका था कार्य उसी ने किया ,
मैं नगण्य निमित्त बना रहता हूं॥

शुचि 'मानवता – हित – चिंतन' में ,
विभु--ध्यानी बना बिहरा करता हूं।
तव 'नेह—नदी' में नहाता हुआ ,
'रस–गेह–की–गैल' गहा करता हूं॥

आत्मगत निवेदन

[कृत्यानुभास]

सकुचाय रहे सच बोलिबे में,
भगवान को 'भूत' बताय रहे।
जिन्हैं 'राम – रमैनी' न नेकु रुची,
'हलषष्ठी'[1] —के—कुंड़्ढ़े' पुजाय रहे ॥

खनकारि रहे, 'खुखुवाय' रहे,
पै खरारि को नाम न ध्याइ रहे।
'तक्कार' – बिहीन भनैं 'भनिता',
कवि—कोविद वे ही कहाय रहे ॥

पाद टिप्पणी—

१—हरछठि पर्व में स्त्रियां मिट्टी के छोटे-छोटे चुक्कड़ (कुंड़्ढ़े) वेसन के लेप से रंगती हैं और उन्हें थोड़ी देर पूजकर फेंक देती हैं।

चिरिया चिदभावन कै है उड़ी,
चमगादुर व्योम मैं छाइ रहे।
कलहंस सुकण्ठ लख्यो न कबौं,
'कलिकाल—कुलिंग' उड़ाय रहे ।।

सब ओर 'खुदी' कै है पैंठ लगी,
खुदखोर खुदा को हैं खाय रहे।
'भुनगे' भन्नाय भनैं 'भनिता',
कलि के कवि ये ही कहाय रहे ।।

हरि—हेतु सबै न हिराने अबै,
सतकाव्य कहे गुन—ग्यान लहा।
नयनीति—प्रतीति—सुरीति नहीं,
किमि कै कबि ! राँचौ सुकाव्य ह...हा...! ।।

हनुमुष्टि प्रहार हन्यो हिय में,
हुलसानो महान 'महाव'...अ...हा।
जब बृत्ति बनी रघुरी सुधरी,
रघुबीर कै कीर्ति कही है महा ।।

"श्री राम-रसायन"

परिशिष्ट

[साथी सुकवियों के स्नेह-वचन]

"कवि तौन कहाँ कवि जौ न सराहै?"

भवानल संतप्ता विह्वलमति तराय दुःखमये ।
श्री रामामृतबर्षी जयति जय - जय चान्द्रायणे ।।

सुकवि पवन कुमार नाग
'पवन'
तिलोकपुर, बाराबंकी

कवि-श्री वृजेश गुप्त
' वृजनंदन '
राठ, हमीरपुर

धनि 'राम - रसायन' - सी कविता,
सविता - सी करे जग में उजियारो ।
चित लाइ पढ़े, वढ़ै राम सों नेह,
रहैं न कहूँ पथ में अँधियारो ।।
हम येई वृजेश मुनी औ गुनी,
हरि के गुन गावत औ गुनवारो ।
तुम राम - पदाम्बुज प्रेम लह्यो,
प्रभुसंज्ञ तुम्है है प्रणाम हमारो ।।

कवि-श्री पं. गिरिजाशंकर भट्ट
' शेखर '
उमरामऊ । ऐहार,
रायबरेली

राम सुरूप निहारि थकै नहीं,
नैन करोरिन हू टक लइये ।
दान करोरिन होय जु पै तज,
यहु रामचरित्र सुने न अधइये ।।
'शेखर' जो मुख होय करोरिन,
सो मुख जीह करोरि चलइये ।
' राम - रसायन ' रूरी निरंतर,
काल अनन्त लों अंत न पइये ।।

कवि-श्री छैलबिहारी अवस्थी
'छैल'
पिहानी—हरदोई

तव 'राम - रसायन' में रसिकै,
मन - पंक्षी उड़ान पै जा रहा है।
जिमि कीर्तिध्वजा फहरे जग में,
किलगान समीर में गा रहा है ॥
'चन्द्रायन' की सधी साधना कृत्ति,
चतुरानन सम्मुख ला रहा है।
स्वजनों के समूह मों 'ललन' है,
सद्पूत-सों 'छैल' को भा रहा है ॥

कवि-श्री कृष्ण प्रसाद मिश्र
'चंचरीक'
साहित्याचार्य
महोबा (बांदा)

'राम - रसायन' का पान करने से,
अस्मिता का अभिमान छूट जाता है।
आँखें खुलती हैं, मन प्राण खिलते हैं,
अन्धकूप का अटूट अरमान टूट जाता है ।:
फैलती हैं बाहें और बाहों में समाता विश्व,
आहों में 'उमङ्गों' का प्रवाह फूट जाता है।
पाता है असीम शान्ति जो कभी 'रसायन' का,
एक घूंट प्यासा, 'चंचरीक' घूंट जाता है ॥

कवि-श्री राघवराम मिश्र

'मलूक'
पीपर गांव, सुलतानपुर

स्वार्थमयी इस व्यापक विश्व में, अर्थ से मात्र विपन्न–
रहा हूँ।
वाणी की वाणी को ही कहके, सुख साधन से सम्पन्न–
रहा हूँ॥
तोष के ही जल का जलपान है, भोजन तोष का अन्न–
लहा हूँ।
बन्धु कृपा से पा 'राम-रसायन', आज महा मुदमान–
अहा! हूँ।

कवि-श्री पं. ओंकार नाथ

'दुखिया'
सेठमऊ—बाराबंकी

" 'राम-रसायन' चाखा पीके।
सब रस-राग लाग मोहिं नीके॥ "

कवि-श्री रघुवंश कुमार श्रीवास्तव

अरुणानगर/एटा

आपकी इस पुनीत प्रांजल
एवं शतधा सशक्त राममयी
रचना के समक्ष मैं स-भक्ति
नत—मस्तक हूँ। पुनः पुनः
प्रणाम स्वीकारें।

कवि-श्री राम कृष्ण शर्मा
साहित्यालंकार
कुल्लू (हिमांचल प्रदेश)

'राम-रसायन' सुधाशक्ति स्वर,
मन प्रमुदित कर, धरा कलुष हर,
कवि ! जन-जन के अन्तराल में स्नेह, सदाशयता है भरता,
चारु-चित्त-हर-छवि कवि भरता।

युग-प्रतिनिधि-कवि, मनहर वाणी,
स्वान्त: सुखाय, भू-कल्याणी,
भाव छटा से मुग्ध मेरा मन पत्र पुष्प अर्पित है करता,
चारु चित्तहर छवि कवि भरता।

सुकवि गिरिजा शंकर द्विवेदी
हारीमऊ, सुल्तानपुर

"मिल गयी शान्ति अन्तर-उर को,
यशवाही 'राम-रसायन' हो ।'
अनुराग अलौकिक दीख पड़ा,
युगवंदित 'राम - रसायन' हो ।।"

कवि श्री दुर्गादत्त पाण्डेय
विन्ध्याचल [धानूकूप] मिर्जापुर

'श्री राम-रसायन' में निश्चय ही नैसर्गिक प्रतिभा विद्यमान है। कविता में सहज भावोच्छलन है जो सहृदयाल्हादजनक है।

सरणिगत वर्गीकरण बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है।

कवि-श्री मुनिलाल 'सरस'
नगर बाजार, बस्ती

यह काव्यात्मक प्रयास अति ललित मनोहारी एवं स्तुत्य है।

अन्त में मैं इस पुस्तक को स-रुचि पढ़कर इतना जरूर-जरूर कहना चाहूंगा कि :–

किया सरसमन राममय, शुचि 'रामरसायन' आय।
मुदित हुआ कविवर तुम्हें, काव्य सुहृद नव पाय॥
मुझे लगा प्रेषित सुकवि ! तेरा यह उपहार।
कुसुमाकर के धाम को, मानो हो सत्कार॥

कविवर महेन्द्र पाल सिंह
पत्यौरा, कमालपुर, हरदोई

यह राम-राग-रंजित कृति शाश्वत साहित्य की एक सुदृढ़ सोपान है, जो सत् शिव एवं मोक्ष की ओर ले जाने वाला है। इसका पठन एक तीर्थ-यात्रा से कम नहीं है। इसकी रचना एक अश्वमेघ यज्ञ के फल से भी अधिक मूल्य रखती है।

कवि-श्री प्रेम नारायण द्विवेदी
'प्रेम'

गंगा जमुनी, बहराइच

श्री 'राम-रसायन' के काव्य-रस का आस्वादन किया। अपूर्व आनन्द मिला।

मैं भाई चान्द्रायण जी के उज्जवल भविष्य की शुभ कामना करता हूं।

कवि श्री लाखन सिंह भदौरिया
भोजपुरा, मैनपुरी

आपकी साधुमना-साधना, भावना एवं श्रेष्ठतम अभिव्यंजना को किसी दैवी कृपा का ही फल मानता हूं। आप पर पूर्ण रामकृपा के बिना यह राम-रसायन की रचना संभव नहीं हो सकती थी।

प्रत्येक ईश्वरवादी जन के कंठहार होने योग्य "रामरसायन" सर्वथा आदरणीय है।

कवि श्री राम देव सिंह
'कलाधर'
घनघटा, बस्ती

'श्री राम रसायन' में आपकी तन्मयता देखते ही बनती है। कविता साकार हो उठी है। 'आत्मनिवेदन' का व्यंग्य बहुत ही अच्छा बन पड़ा है।

सफलता के लिए आपको बधाई।

कवि-श्री राम अभिलाष शुक्ल
सरपेनटाइन रोड
बरेली केन्ट

सम्पूर्ण पुस्तक आद्योपान्त पढ़ गया। आपने भक्ति एवं काव्य का अपूर्व समन्वय किया है। भावनाएँ उदात्त एव साहित्यिक हैं। पुस्तक प्रत्येक दृष्टकोण से उपयोगी एवं पठनीय है।

कवि-श्री चन्द्रपाल सिंह
'मयंक'
फेथफुलगंज,कानपुर
(उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से पुरस्कृत कवि)

आपकी प्रस्तुत रचना..............पूर्ण प्रशंसा की अधिकारिणी है, और आपके सुन्दर भविष्य का संकेत करती है।

कविवर अखिलेश त्रिवेदी
भदेसर, सीतापुर

मैं आपकी इस अप्रतिभ कमनीय कृति का मनोयोग पूर्वक आद्यन्त अध्ययन कर गया। मन महा-मुग्ध हो गया इसमें भक्ति की तरल तरंगिणी अबाध रूप से प्रवाहित है। कवि का आध्यात्मिक ज्ञान अतीव उत्कृष्ट प्रतीत होता है। ओउम पर आपकी कल्पना अत्युत्तम है। व्याकरणानुमोदित भाषा एवं मौलिक भावाभिव्यक्ति सर्वथा बन्दनीय है।

कवि-श्री जलाल अहमद खाँ
'तनवीर'
जयसुखपुर/बाराबकी

'श्री-राम-रसायन' को तीन बार पढ़ चुका हूं। इसमें मन ऐसा रम गया है कि इसे बार-बार पढ़ने को मन ललकता है।

जन-जन में सौरभ भरता,
यह " राम–रसायन " है।
रचना के अमर रचयिता,
शतवार, सहस्त्र नमन् है।।
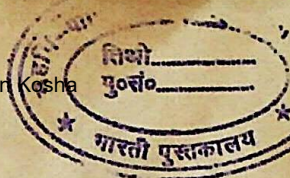
साभिवादन

रचयिता-का-परिचय

पूरा नाम — राजेन्द्र नारायण सिंह 'चान्द्रायण'
जन्म तिथि — १३ / मार्च / १९३० ई०
शिक्षा-दीक्षा — एम० ए० / साहित्यरत्न
पितृ नाम — कुं० रणजीत सिंह जू चान्द्रायण [स्वर्गीय]
पितामह — कुं० रामदीन सिंह जू देव चान्द्रायण [जीवित]
स्थाई पता — ... ... रामभवन
स्थान/पत्रालय-कोटिया/जनपद-फतेहपुर (यू०पी०)
वर्तमान पता — ... ... सी० ओ०
मुख्यालय-जामो (JAMO), जनपद-सुल्तानपुर (यू०पी०)

प्रकाशित पुस्तकें :—

(I) प्रियम्बदा (स्फुट गीत संग्रह) (IV) मंगलदीप (नीति परक छन्द गीतिका)
(II) चान्द्रायणी (कथा काव्य संग्रह) (V) उर ऊर्मि (बृजावधी छंद संकलन)
(III) रूपबाला (नारी के नौ रूप) (VI) शान्ति (आस्तिक पदावली संग्रह)
(VII) श्री राम-रसायन (प्रस्तुत गीति काव्य)

आगामी रचनाएँ :—

[I] श्री रामस्य रामू (अनुहंस प्रयाण : मानस हंस की मनिता)
[II] श्री-श्री समीरलला (बनरानन विप्र भक्तिमान हनुमान का सवैया विधा में चरित गान)
[III] श्री श्यामा-श्याम स्तवन (सवैया विधा)
[IV] काव्यायन [V] विरागी वन में

मांगलिक संदे
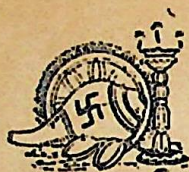
□□□ सम्पादकाचार्य ल

'हिन्दी विश्वदश

मैं इस कीर्तिकाव्य का नाम 'श्री राम-रसायन'
हूँ। संतद्वय तुलसी और कबीर तो साक्षात राम-दृष्टा
के निकट थे। उन दोनों ने इस शब्द का प्रयोग स्वयं अपने काव्य में किय
है। अतः यही नामकरण मेरी राय में सर्वथा उपयुक्त है।

वर्तमान शताब्दी में भी दर-असल में गाँधी की शान्ति के स्त्रो
राम थे। यही कारण है कि उनके अन्तिम उद्गारों में श्री राम ही अभिव्यक्त हुए थे। लेकिन यह विडम्बना ही है कि महात्मा गांधी को अपनाकर भी देश की राजनीति ने उनके आदर्श को नहीं अपनाया, और क्या इससे भी बड़ी विडम्बना यह नहीं है कि भारत के अधिकांश लोक-मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की प्रतिभा स्थापित होने के बाद भी भारतीय राजनीति उससे वंचित रही ?...........।

समस्या और संकट की घड़ियों में ही भारत राम को स्मरण करता रहा है। चार शताब्दी पहले समाज की किंकर्त्तव्यविमूढ़ता और पराधीनता की स्थिति में तुलसी ने राम का स्मरण किया और एक नई आशा, शक्ति एवं धैर्य का लोक-मानस में संचार किया। गाँधी जी ने भी राम का स्मरण किया और आजादी की लड़ाई जीत ली।

वस्तुतः राम भारतीय मनीषा, चिंतन, ज्ञान और कर्म से प्रसूत आदर्श हैं। राम में निहित मानव-मूल्य शाश्वत हैं। वे जीवन की समग्रता के परिचायक हैं। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम भारतीय संस्कृति और जीवन के केन्द्रबिन्दु हैं। भारत में जब भी सांस्कृतिक जागरण का मंत्र फूँका जायेगा, उसमें श्री राम का प्रमुख नाद होगा।

आपकी इस पुस्तक की सविस्तर समीक्षा 'हिन्दी विश्वदर्शन' के वर्ष ४ अंक ९ (सितम्बर १९८२ ई.) में हम छाप चुके हैं। वही इसका सही आकलन है। आप अपनी सारस्वत साधना में रत हैं, यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरी शुभकामनाएँ।